खाई के उस पार

लेखक श्रीपाद विष्णु कानडे
चित्रकार शैवाल चैटर्जी

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

प्रथम संस्करण 1990
पुनर्मुद्रण 1991

KHAI KE US PAR

© चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट 1990
ISBN 81-7011-477-2

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरु हाउस, ४ बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित और ट्रस्ट के मुद्रणालय इन्द्रप्रस्थ प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

जन्म-दिन

आज रमेश बहुत खुश दिखाई दे रहा था। कोई कहता आज इसका सोलहवां जन्मदिवस है, इसलिये वह खुश है। कोई कहता कि वह अपने उपहारों को देखकर प्रसन्न है। कोई कुछ कहता, कोई कुछ।

असल बात कुछ और ही थी। आज उसे वह बात मालूम होने वाली थी जिसकी प्रतीक्षा वह वर्षों से कर रहा था। उसने लाख चाहा था कि मां उसे वह बात पहले ही बता दें पर उसकी मां ने उसकी एक न सुनी। अन्त में प्रतीक्षा करते-करते आज वह दिन आ ही गया जब उसकी लालसा पूर्ण होने वाली थी। वह बड़ा उत्सुक था।

जन्मदिवस के उपलक्ष्य में दिये जाने वाले भोज में उसका मन किंचित मात्र भी नहीं लग रहा था। वह तो इस फिराक में था कि कब यह खतम हो और कब...

रात के दस बजे जब उसे अवकाश मिला तो वह दौड़ता हुआ अपनी मां के कमरे में गया। मां ने मुस्कराते हुये कहा, "रमेश, मैं देख रही थी कि आज तुम्हारा मन पार्टी में बिलकुल नहीं लग रहा था। तुम्हारी इस बेचैनी का कारण मैं भली-भांति जानती हूं।"

"मां, अब अधिक देर न करो और अपने वचन का पालन करो। तुमने मुझे वर्षों से रोक रखा है। मैं ही जानता हूं कि मैंने ये वर्ष कैसे काटे हैं। तुमसे भी वह छिपा नहीं है," रमेश बोला।

"हां बेटा, मैं भी जानती हूं। अच्छा ध्यान देकर सुनो। तुम मुझसे हर बार अपने पिता के बारे में पूछते हो। तुम यह जानना चाहते हो कि वह कहां हैं, क्योंकि पिछले दस वर्षों से तुमने उन्हें देखा नहीं है। मैं भी दस वर्षों से तुम्हें एक ही जवाब देती आ रही हूं कि जब तुम सोलह वर्ष के हो जाओगे, तब मैं तुम्हें उनके बारे में बताऊंगी।

"शायद तुम्हें इस बात पर भी आश्चर्य होता होगा कि आखिर वह करते क्या थे? इतना धन हम लोगों के लिये कैसे छोड़ गये और फिर अचानक कहां गायब हो गये?" रमेश बड़े ध्यान से मां की बात सुन रहा था।

मां ने आगे कहा, "आज मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगी। उससे तुम्हें यह अहसास हो जायेगा कि इतने दिनों तक मैंने तुम से यह बात क्यों छिपाई।

"तब तुम छह वर्ष के थे, उस समय हम लोग बहुत ही गरीब थे। उन्हीं दिनों एक बड़े सेठ को अपने विश्वस्त सूत्रों से यह पता चला कि नेपाल की कुछ विशेष पहाड़ियों में सोना पाये जाने की संभावना है। सेठ साहसी था और वह अपना भाग्य भी आजमाना चाहता था। इसलिये उसने अपने साथियों के साथ सोना खोजने का निश्चय किया। तुम्हारे पिता भी उस मण्डली में सम्मिलित हो गये। वह इंजीनियर थे। इसलिये उन्हें पैसा भी अच्छा मिला। हम लोगों की व्यवस्था कर वह उस दल के साथ चले गये।"

"और... अब तक नहीं लौटे!" रमेश ने कहा। "सुनो तो अभी मुझे बहुत कुछ कहना है। करीब छह माह बाद वह दल लौट कर आ गया। सेठ के हाथ सोना तो जरूर लगा पर अनुमान से कम। किन्तु वह लालची था। शर्तों के अनुसार तुम्हारे पिता को खोज का दस प्रतिशत सोना मिलना था। पचास लाख का सोना मिला लेकिन तुम्हारे पिता को केवल पांच हजार पर संतोष करना पड़ा। उन्हें सेठ के विश्वासघात से बहुत ठेस पहुंची। वह सेठ से बदला लेना चाहते थे पर विवश थे। सेठ तो लखपति बन बैठा था। उसके विरुद्ध कोई कैसे आवाज उठाता।"

"उस दुष्ट सेठ का नाम क्या है?" रमेश ने क्रोधित होकर पूछा।

"धीरे-धीरे सब बता दूंगी बेटा। वह कहते थे कि उन पहाड़ियों में एक ऐसा स्थान है जहां पर पहुंचना दुर्गम ही नहीं, असम्भव भी है। किन्तु वहां सोना मिट्टी के मोल है अगर वहां पहुंचने का रास्ता निकाला जा सके तो वारे न्यारे हो जायेंगे।

"मेरी उन्होंने एक नहीं सुनी, उन पर सोने का भूत सवार था। सेठ का विश्वासघात रह-रह कर उन्हें विचलित कर देता था। आखिर एक दिन मेरे लाख मना करने पर भी वह उस कांचन मृग की खोज में चल ही पड़े।

"मैं ही जानती हूं कि मैंने वह साल कैसे व्यतीत किया। आखिर वह एक दिन अपनी खोज में सफलता पाकर घर लौटे। उन्हें नेपाल की उस पहाड़ी के पीछे एक सोने की जगमगाती नगरी मिल गई थी। अपने साथ वह प्रचुर मात्रा में सोना भी लाये। तब हम लोग मालामाल हो गये। बीच-बीच में तुम्हारे पिता अकेले ही जाकर सोना ले आते थे। उन्होंने किसी दूसरे व्यक्ति को उस स्थान का पता लगने नहीं दिया था।

"यात्रा में इतने कष्ट सहने पर भी वह जाते जरूर थे। मैंने कई बार कहा कि किसी पर विश्वास कर लो और उसे साथ ले लो पर उन्होंने मेरी बात इस कान से सुनी और उस कान से निकाल दी।

"हमारा जीवन सुखपूर्वक गुजर रहा था लेकिन इस सुख शान्ति का आनन्द हम अधिक दिनों तक न लूट सके।" इतना कहकर रमेश की मां चुप हो गईं।

पिता का पत्र

"क्यों क्या हुआ मां?" रमेश ने अधीरता से पूछा। "वही विश्वासघाती लालची सेठ हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ गया। उससे यह बात छिपी न रही। उनके पास वह कई बार आया, उन्हें नाना प्रकार के

प्रलोभन दिये पर वह नहीं माने। फिर उस दुष्ट ने एक चाल चली।

"एक दिन तुम्हारे पिता लौटे तो बहुत घबराये हुये थे। पूछने पर भी उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया। सुबह चार बजे के लगभग मेरी नींद खुली। शायद कोई बुरा स्वप्न देखा था, देखा उनका पलंग खाली है। हठात् मन को किसी आशंका ने धर दबाया, घर भर ढूंढ़ डाला, इतनी रात को गये तो गये कहां? उनकी मेज पर मेरे नाम का पत्र पड़ा था।" इतना कहकर रमेश की मां ने अपना संदूक खोलकर दो पुराने लिफाफे निकाले। एक लिफाफे में से पत्र निकालकर रमेश को देते हुए कहा, "यह वही पत्र है।"

रमेश उत्सुकता से पत्र पढ़ने लगा।

प्रिय रामेश्वरी,

आज मैं सुदीर्घ काल के लिये या शायद सदा के लिये गृह त्याग कर रहा हूं। अब मैं अपनी प्रिय कांचन गुफा में वास करूंगा। उसी सेठ ने, जिसका नाम लेना भी पाप है, मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचा है। कल शाम को उसी सेठ के यहां उसके नौकर का खून हो गया। खून का आरोप मुझ पर लगाया गया है, पर मैं पूर्णतया निर्दोष हूं। मेरा अनुमान है कि सेठ ने ही अपने नौकर का खून करवाया है। क्योंकि नौकर यह जान गया था कि सेठ तस्कर है।

मुझे डराया, धमकाया गया कि यदि मैं कांचन गुफा का पता दूं तो बचा लिया जाऊंगा। मुझे यह चेतावनी भी दी गई है कि यदि मैं चौबीस घंटों के भीतर कांचन गुफा का पता नहीं बताऊंगा तो खून के अपराध में पकड़वा दिया जाऊंगा। मेरे विरुद्ध ऐसे-ऐसे प्रमाण जुटाये गये हैं, कि मेरे लिए स्वयं को निरपराध सिद्ध करना प्रायः असम्भव है। इसी कारण मेरे पास अब भागने के सिवाय दूसरा और कोई चारा नहीं है। मैं उसी स्थान पर जा रहा हूं जिसका वर्णन करना मानों सूर्य को दीपक दिखाना है। इसका उल्लेख मैं कई बार तुमसे कर चुका हूं। वह मेरे लिये नन्दन-वन है, और सबसे सुरक्षित स्थान भी। मैं छिपकर लौटने का कभी-कभी प्रयास करूंगा। लेकिन कुछ कह नहीं सकता कि कब, यदि मैं दस वर्ष तक न लौटा तो, समझ लेना...।

लेकिन एक बात अवश्य करना, तुम धन से परिपूर्ण हो, रमेश को मेहनती बनाने की चेष्टा करना और सोलह वर्ष का होने पर उसे मेरी कांचन गुफा की खोज में अवश्य भेजना। यदि मैं इस दुनिया में न भी रहा तो कोई बात नहीं। कम से कम जब

वह उस स्थान को खोज निकालेगा, तब वह अपने पिता के असीम साहस की कुछ कल्पना तो कर ही सकेगा। मैं साथ में एक पत्र उसके लिये छोड़ रहा हूं जिसमें मार्ग का नकशा है। यह नकशा उसका पथ-प्रदर्शन करने में सहायक सिद्ध होगा।

वैसे तो कहने की आवश्यकता नहीं है पर आवश्यकता न होते हुए भी मैं पुनः कह देना चाहता हूं कि खून में मेरा तनिक भी हाथ नहीं है। ईश्वर चाहेगा तो यह भेद किसी दिन खुल ही जायेगा।

देखो रमेश को अवश्य भेजना।

तुम्हारा
विपिन चन्द्र

रमेश पत्र पूरा पढ़ कर विचार सागर में गोते खाने लगा। 'आज इतने दिनों के बाद उसे इस रहस्य का पता लगा है। अब उसके ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है।' उसने मां की ओर देखा। स्पष्ट था कि पिताजी बीच में एक बार भी वापस नहीं आये थे, तब भी उसने पूछा, "मां, तब से पिताजी का कुछ पता चला?"

"नहीं बेटा, उनका कुछ पता नहीं चला। कई बार मेरी यह इच्छा हुई कि इस दूसरे पत्र की सहायता से उनका पता लगाऊं, पर यह सोचकर ऐसा नहीं किया कि उन्होंने ये कष्ट सेठ को उस स्थान का पता न लगने देने के लिये ही सहन किये हैं, फिर मैं यह मार्ग क्यों सबको बतलाऊं। उनकी इच्छा थी कि यह मार्ग केवल उनके पुत्र को ही मालूम हो। मैं मन मसोस कर रह गई। धीरज धारण किये इस दिन का इन्तजार करती रही।"

"मां उस खून के बारे में कुछ पता चला?"

"हां बेटा, दूसरे ही दिन उनके नाम वारण्ट निकला। घर की तलाशी हुई। किन्तु फल कुछ न निकला। उनको पकड़वाने के लिये इनाम की घोषणा की गई। लेकिन इस बीच तो वह अपनी गुफा में पहुंच ही गये होंगे। यह दोनों पत्र पुलिस से छिपाने में मुझे बड़ी सूझबूझ से काम लेना पड़ा। उनके नाम वारण्ट अब भी जारी हैं।"

इतना कहकर रामेश्वरी चुप हो गई। फिर बहुत ही गंभीर स्वर में उन्होंने कहा, "बेटा, यह दूसरा पत्र अपने कमरे में जाकर खूब ध्यान से पढ़ो। यह तो पता नहीं कि अब भी तुम्हारे पिता जीवित होंगे या नहीं लेकिन एक आशा जरूर है कि वह जीवित होंगे और तुम उन्हें अवश्य ही ढूंढ़ लाओगे। पत्र पढ़कर तुम्हें मालूम हो जायेगा कि कांचन गुफा का मार्ग बहुत कठिन व सकंटों से परिपूर्ण है। वहां जाने की हिम्मत करनेवाला उनके समान ही बहादुर होना चाहिये। मैंने तुम्हें वैसा बनाने की जी-जान से चेष्टा की है। मैं जानती हूं कि तुम्हें इस खोज पर भेजने का मैं दुस्साहस कर रही हूं।

"इस पर ठीक से विचार करो और पत्र पढ़ कर ही अपना निश्चय मुझे बताना।"

"मां, सुनो पत्र पढ़े बिना ही मैं..." पर रामेश्वरी पूरा वाक्य सुनने के लिये वहां न थीं।

निश्चय

रमेश ने बड़े ध्यान से वह लंबा पत्र पढ़ा। पत्र क्या था, एक छोटी-सी रोचक कहानी ही थी। मार्ग की दुर्गमता और आनेवाले संकटों को किसी भी प्रकार से छिपाने की कोशिश नहीं की गई थी। उस गुफा के भीतरी मार्ग का वर्णन तो रोंगटे खड़े कर देने वाला था। पग-पग पर जान का डर था। ठीक स्थान पर पहुंचने के लिये और रास्ता न भूलने के लिये कई हिदायतें भी दी गई थीं। अन्त में एक टिप्पणी थी।

प्रिय रामेश्वरी,

तुम्हें इस पत्र द्वारा मार्ग की भयानकता का अनुमान हो गया होगा, संभव है तुम अपने बेटे को इस कांचन मृग के पीछे न भटकने देना चाहो। पर सोचो, यदि मैं

जीवित रहा और अपने पुत्र द्वारा खोजा गया तो मुझे कितनी खुशी होगी। लेकिन इतना जरूर करना कि यह पत्र रमेश को सोलह वर्ष का होने पर ही पढ़ने को देना। यदि वह भयानक संकटों को झेलने में आगा-पीछा करे तो उसे बाध्य न करना, और यदि उमंग में आकर वह इस कार्य को करने के लिये अग्रसर हो तो उसके मार्ग का कांटा न बनना। न मालूम...

यह टिप्पणी पढ़ते-पढ़ते रमेश व्यग्र हो उठा। आखिर उसकी मां ने उसे बड़ा करने में, उसे लायक बनाने के लिए इतनी मेहनत की है। वह एक बहादुर पिता का बेटा है। कुछ भी क्यों न हो जाये चाहे उसके पिता जीवित हों या न हों, वह अवश्य ही कांचन गुफा की खोज करेगा।

उसने एक बार और उस पत्र को ध्यान से पढ़ा। फिर अपनी डायरी में कुछ लिखने लगा। बेचैनी की हालत में पलंग पर लेटा किन्तु रात भर उसे नींद न आई। सुबह उसकी पलकें नींद से बोझिल होने लगीं। जब रामेश्वरी उसे जगाने आई तब वह नींद में ही बड़बड़ा रहा था, "पिताजी, आखिर मैं आपकी कांचन गुफा में पहुंच ही गया पर आप कहां...?" रामेश्वरी ने उसे जगाकर उसके सुख स्वप्न को तोड़ दिया। "रमेश, अभी कुछ किया भी नहीं कि गुफा में पहुंच गये, चलो उठो।"

रमेश उठ बैठा। उसने मां से कहा, "मां, मैंने निश्चय कर लिया है और मुझे विश्वास है कि तुम मेरे मार्ग का कांटा नहीं बनोगी। जनकपुर या उसके आगे जहां तक जाना संभव होगा, मैं तुम्हें भी ले चलूंगा। पिताजी जीवित हों या न हों, मैं उस कांचन गुफा को अवश्य देखूंगा। हां, एक बात और मां, तुमने मुझे अभी तक उस सेठ का नाम नहीं बताया। भले ही इस बात को हुये वर्षों बीत गये, पर मैं उस नर पिशाच से बदला अवश्य लूंगा। उसका नाम तो बताओ, मां।"

"मैंने और तुम्हारे पिताजी ने निश्चय किया था कि हम उसका नाम अपनी जबान पर नहीं लायेंगे। यही कारण है कि अभी तक तुम उसके नाम से अनभिज्ञ रहे। जानने की उत्कंठा हो तो हीरा बैंक में जाकर पता

लगाओ। इतना जान लो कि आजकल वह उसका सभापति है।"

"अच्छा ठीक है मां, मैं उसका पता लगा लूंगा। जिस मार्ग का वर्णन पिताजी ने किया है वह नेपाल में जाकर जनकपुर से प्रारंभ होता है। मैं यात्रा शुरू करने से पहले सारी बातें जानना चाहता हूं जिससे तैयारी करने में कठिनाई न हो। पन्द्रह दिनों के अन्दर मैं सब काम खतम कर लूंगा। ठीक आज से बीस दिन के पश्चात् हम निकल पड़ेंगे।"

ठीक वैसा ही हुआ। रामेश्वरी को डर तो सिर्फ इस बात का था कि रमेश सेठ के साथ न जाने क्या करे। कहीं ऐसा न हो कि रमेश मुसीबत में फंस जाये। रमेश ने कई बार कहा, "मां, घबराओ नहीं, मैंने ऐसी चाल चली है कि अब वह सेठ बिना फंसे नहीं रहेगा।" इसके अतिरिक्त उसने और कुछ नहीं बताया था। जनकपुर से लौटने के बाद शेष दिन वह जाने की तैयारी करने में ही व्यस्त रहा।

प्रस्थान

जनकपुर, नेपाल की पहाड़ियों में स्थित एक छोटा-सा गांव है। यहीं से कांचन गुफा की ओर जानेवाला निर्दिष्ट मार्ग शुरू होता था। रमेश ने पूरी तैयारी कर ली थी। उसके इस साहसी कार्य में उसका मित्र वसन्त उसके साथ था। वसन्त अनाथ था। जब वह निरा शिशु ही था तभी उसके माता-पिता चल बसे थे। वह लम्बे अर्से से दूर के काका के पास रह रहा था। काका को वसन्त बोझ-सा प्रतीत होता था। इसलिये उसकी दशा बहुत दयनीय थी। रमेश और उसकी मां समय-समय पर हर प्रकार से उसकी सहायता करते थे। उनका वह अहसानमंद था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह रमेश का अभिन्न और घनिष्ठ मित्र था। जब उसने रमेश की यात्रा के विषय में सुना तो वह भी उसके साथ चलने को उत्सुक हो उठा। काका के अत्याचारों से वह दुखी भी था। काका ने भी

उसे जाने की सहर्ष अनुमति दे दी। उन्होंने सोचा चलो बला टली। रामेश्वरी भी अपने पुत्र के साथ इस बलिष्ठ युवक को देखकर ईश्वर को धन्यवाद देने लगी। उसने सोचा एक से भले दो। रमेश और वसन्त दोनों ही बहुत प्रसन्न थे।

जनकपुर में रमेश ने एक छोटा-सा घर पहले से ही किराये पर ले लिया था। दूसरा काम रमेश ने यह किया कि अपने लिए एक तीसरा साथी और ढूंढ़ निकाला। यह काम उसने बहुत ही होशियारी के साथ किया था। इसी तीसरे साथी पर उसे पूरा भरोसा था। उसी के बल पर वह उस कठिन कार्य में सफलता पाने की आशा करता था। था तो वह ठिगने कद का दुबला-पतला लड़का पर था बहुत ही फुर्तीला। वह एक गोरखे का लड़का था। उसका रंग सांवला था। उम्र सोलह वर्ष, नाम था जंगू। रमेश द्वारा की गई जंगू की खोज अमूल्य थी। यह छोटा लड़का आसपास के जंगलों और पहाड़ों के संकट से पूर्णतः परिचित था। उसके पिता ने यह विश्वास दिलाया था कि कोई भी इसके साथ बिना डरे जा सकता है। वह सैकड़ों शिकारियों का पथ-प्रदर्शन कर चुका था। रमेश ने पहली बार मिलने पर जब जंगू के पिता को अपना उद्देश्य बताया था तब उन्होंने कहा था, "देखिये, उस कांचन गुफा के पीछे सैकड़ों अपनी जान गवां चुके हैं। लेकिन जब आप अपने पिता की बात बतलाते हैं तो मुझे आश्चर्य होता है। आपके पास नकशा भी है। तब मैं अधिक और क्या कह सकता हूं। आपका पथ-प्रदर्शक सिर्फ मेरा जंगू ही हो सकता है। यह सच है कि आप उसे मुंहमांगा पैसा देंगे। किन्तु जंगू आपके साथ एक शर्त पर जा सकता है। वह आपके साथ जायेगा जरूर और ईमानदारी से आपकी सेवा भी करेगा पर जब उसे लगेगा कि अब आगे बढ़ना असम्भव है या खतरनाक है तब या तो आप सबको वापस लौट आना होगा या फिर आपको जंगू को वापस आने की अनुमति देनी होगी।"

इतना अच्छा साथी मिलना भाग्य की ही बात थी। रमेश ने शर्त स्वीकार कर ली। एक वर्ष के लिए मुहंमांगा पैसा भी दे दिया। कार्य में

सफलता प्राप्त होने पर चौगुना इनाम देने का वचन दिया। जंगू तथा उसके माता-पिता बहुत खुश थे। रमेश ने अपनी मां को जनकपुर में ही जंगू के माता-पिता की निगरानी में छोड़ने का फैसला किया। इस बात से वे भी सहमत थे।

जंगू में विशेष गुण यह था कि वह टूटी-फूटी हिन्दी तो बोल ही लेता था साथ ही आसपास के आदिवासियों की भाषा भी वह भली-भांति समझ लेता था।

एक दिन बड़े सवेरे तीनों वीर आशीर्वाद लेकर चल पड़े। तीनों तीन टट्टुओं पर सवार थे। सामान भी उन पर लदा था। सबसे कम सामान जंगू के टट्टू पर था। जंगू के माता-पिता और रामेश्वरी उन्हें थोड़ी दूर तक पहुंचाने साथ आ गये।

जंगू की करामात

दोपहर होते-होते ये लोग काफी दूर निकल आये थे और चलते-चलते घने वन में पहुंच गये। जंगू सबसे आगे था। रमेश और वसन्त को बड़ा आनन्द आ रहा था। यहां-वहां की शोभा देखकर, प्राकृतिक छटा निरखकर वे असीम आनन्द का अनुभव कर रहे थे। जंगल की कठिनाइयों का अभी उन्हें ठीक-ठीक आभास न हुआ था।

करीब दोपहर को तीन बजे यह पार्टी एक जगह रुकी। सामने जंगलों से आच्छादित पर्वत था। जंगू ने कहा, "यही तुम्हारा पहाड़ है।" रमेश ने अपनी जेब से नकशा निकाला और चारों ओर दृष्टिपात करते हुए वसन्त से कहा, "यहां से कठिन मार्ग आरम्भ होता है। इस पहाड़ को लांघना आगे के संकटों को देखते हुए बांये हाथ का खेल है। इसे पार करने में चार घंटे का समय लगता है। लेकिन रात के समय इसे पार करना खतरनाक है।"

अब इस बात पर विचार-विमर्श होने लगा कि पहाड़ को अभी पार करना शुरू किया जाये या नहीं। वसन्त ने कहा, "नये होने के कारण और पहाड़ पर चढ़ने की आदत न होने के कारण शायद हम घंटों में रास्ता तय कर पायें। इस हिसाब से तो रास्ते ही में रात हो जायेगी। अच्छा यही होगा कि हम सुबह ही चढ़ाई शुरू करें।"

रमेश आगे बढ़ने के लिये उत्सुक था। अंत में पार्टी के कमाण्डर-इन-चीफ साहब से सलाह ली गई। जंगू ने कहा, "पहाड़ को पार करने में चार घंटे से अधिक समय नहीं लगेगा। रास्ते में सिर्फ कुछ जंगली जानवरों का ही डर है, विशेषकर शेर का। घबराने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि यहां के शेर जब तक बूढ़े न हों तब तक मनुष्य पर हमला नहीं करते और यदि शेर मिले भी तो मेरे पास उनके लिए बहुत अच्छी दवा है।" आखिर पर्वत पार करने का निश्चय किया गया।

थोड़ी देर विश्राम कर उन्होंने चलना शुरू किया। जंगू सबसे आगे था। वसन्त उसके पीछे और रमेश सबसे पीछे। रमेश और वसन्त ने अपनी पिस्तौलें भरकर तैयार कर ली थीं। दो घंटे तक ये तीनों चलते गये। सहसा जंगू ठिठक कर रुक गया। वह बड़ी जोर-जोर से सांस लेने लगा। ऐसा प्रतीत होता था मानों वह कुछ सूंघ रहा हो। टट्टू भी घबराये हुए दिखाई देने लगे। जंगू ने रमेश से कहा, "देखो, अब हमें यहां से बहुत ही सावधानी से आगे बढ़ना होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ जंगली जानवर विशेषकर शेर, शेरनी और उनके बच्चे अभी-अभी यहां से निकले हैं। सम्भव है कि वे कहीं आसपास ही छिपे हों। इन टट्टुओं को देखकर वे हम पर जरूर आक्रमण करेंगे। हो सकता है छिपकर हमारा पीछा ही करें, कुछ भी हो सकता है। रात में और आगे बढ़ना खतरे से खाली नहीं है। अच्छा तो यही होगा कि हम इस घने वृक्ष के नीचे रात बिता दें।"

तत्काल ही ठहरने का प्रबंध किया गया। आधे घंटे के भीतर ही वसन्त और रमेश ने एक तम्बू तान दिया। टट्टुओं को वृक्ष के नीचे बांध

दिया गया। पास ही के झरने पर सबने पानी पिया। पानी पीकर उनकी थकावट दूर हुई। जंगू ने कहा, "जब तक छिपे हुये शेरों को मैं यहां से न भगा दूं तब तक मुझे चैन न मिलेगा। अच्छा देखो, मैं तुम्हें शेरों को दिखाता हूं साथ ही उन्हें भगाता भी हूं। इस पेड़ पर चढ़ जाओ और सुनो, पिस्तौल भूलकर भी न चलाना, नहीं तो बना बनाया काम बिगड़ जायेगा।"

रमेश और वसन्त उसके कथनानुसार वृक्ष पर चढ़ गये। यह देखने के लिये वह बहुत उत्सुक थे कि जंगू क्या करता है।

जंगू पास ही की झाड़ी में छिप गया। सहसा वहां से एक प्रकार का आर्तनाद सुनाई पड़ा। टट्टू डर के मारे चिल्ला रहे थे। रमेश और वसन्त घबराकर नीचे देखने लगे। उनके टट्टू तो वहीं पर थे। फिर यह आवाज कैसी? सहसा जंगू दौड़ता हुआ आया और उसी वृक्ष पर चढ़ गया। हांफते हुए वह बोला, "होशियार हो जाओ, शेर और उसके बच्चे आ रहे हैं।"

पास ही की झाड़ी में कुछ आवाज हुई और एक भयानक शेर और उसके दो बच्चे दबे कदमों से टट्टुओं की ओर बढ़ने लगे। रमेश और वसन्त का बुरा हाल था। सर्कस में उन्होंने कई बार शेर देखे थे। पर जंगल में शेर देखने का यह पहला ही अवसर था। वसन्त की तो जान ही निकल रही थी। उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया था। डर के कारण वह कांप रहा था। रमेश भी डर गया था, पर इतना नहीं। उसने इस डर से कि कहीं वसन्त नीचे न गिर पड़े, उसे रस्सी से पेड़ की डाल से बांध दिया।

सहसा एक बड़ी कठोर, डरावनी और भर्राती हुई डकार सुनाई देने लगी। वह शेर की गर्जना तो नहीं थी किन्तु आवाज मन में बहुत भय उत्पन्न कर रही थी। धीरे-धीरे वह आवाज़ तेज होने लगी। रमेश और वसन्त यह सोचकर कि यह नई मुसीबत क्या है, यहां-वहां ताकने लगे। इसी समय एक बड़ी ही आश्चर्यजनक घटना हुई। शेर रुक गया। वह

चारों ओर देखने लगा। भर्राती हुई आवाज पास ही कहीं से अब भी आ रही थी। शेर अपने बच्चों सहित दुम दबाकर भागा। वह भर्राती आवाज और तेज हो गई। शेर तेजी से भागा और देखते ही देखते न जाने कहां अदृश्य हो गया।

रमेश और वसन्त की शेर से छुटकारा पाकर भी घबराहट दूर न हुई थी। वे बड़ी जोर-जोर से जंगू को पुकारने लगे। जंगू पेड़ से कूद पड़ा। एक बार फिर वही आवाज सुनाई दी। जंगू हंसते-हंसते लोटपोट हो गया। अब रमेश की समझ में आ गया कि जंगू ही वह आवाज कर रहा था।

धीरे-धीरे वसन्त और रमेश वृक्ष से नीचे उतरे। तब जंगू ने उन्हें बताया, ''मैं जंगल के किसी भी जानवर की आवाज की नकल अच्छी तरह से कर सकता हूं। पहले मैंने टट्टुओं की आवाज निकालकर शेर को लालच दिया। तुम्हें मालूम नहीं कि शेर ताकतवर होने पर भी यहां भटकने वाले जंगली भैंसों से बहुत डरता है और उसकी आवाज सुनते ही भाग खड़ा होता है। यह भर्राती हुई आवाज उसी भैंसे की आवाज की नकल थी। उसे सुनते ही शेर भाग खड़ा हुआ। अब कुछ दिन तक वह यहां नहीं आयेगा। अच्छा हो कि इस जंगली भैंसे से अपनी मुलाकात न हो। मैं शेर से अधिक उससे डरता हूं। समझे कुछ।''

वसन्त और रमेश अब समझे और खूब समझे। उन्हें इस जंगली बालक के असाधारण गुणों पर गर्व होने लगा।

रमेश ने भी ईश्वर को शतशः धन्यवाद दिया कि इस कठिन कार्य में उन्हें ऐसा अमूल्य और योग्य साथी मिला है।

फिर वहां आग जलाई गई। और वे तीनों बहादुर युवक उस भीषण स्थान में अंधकार में मजे से गप्पें लगाते अगले दिन के विषय में विचार करने लगे। यह उनकी पहली भयानक रात्रि थी। केवल उस आग के पास, उस प्रकाश के गोले के नजदीक ही कुछ गरमी थी, उजाला था। लेकिन अब उन्हें डर नहीं लग रहा था इसके बावजूद भी कि आसपास अंधेरा, खतरा और बहुत सर्दी थी। रातभर वे क्रम से पहरा देते रहे।

तूफान

रमेश अपना नकशा देखता जा रहा था। वह जंगू की सलाह लेता और आगे बढ़ता जाता। धीरे-धीरे जंगल घना हो चला किन्तु अब तक वे काफी ऊंचाई पर पहुंच गये थे। वहीं उन्हें वह नदी मिल गई जिसका वर्णन नकशे में था। इसी के किनारे-किनारे चलकर उन्हें बीस मील जाना था। इन दो दिनों में कोई विशेष घटना नहीं हुई थी। दिन पर दिन जंगू का महत्व बढ़ता जाता था। यह जंगली बालक बहुत ही काम का साबित हो रहा था। रमेश ने यही सोचा कि यदि जंगू न होता तो उन लोगों का न मालूम क्या हाल होता? एक दिन वसन्त एक चट्टान से फिसलकर गिर पड़ा। उसे कुछ चोट आई। रमेश अपने सामान में से आयोडीन की शीशी ढूंढ़ने लगा। लेकिन बहुत ढूंढ़ने के पश्चात् पता चला कि शीशी फूट गई है। जंगू दौड़ता हुआ पास की झाड़ी में गया, वहां से एक हरी पत्ती ढूंढ़ लाया और उसे निचोड़ कर उसका रस घाव पर लगा दिया। थोड़ी देर बाद वसन्त का सब दर्द जाता रहा। वह पूर्ववत चल सकता था। इस प्रकार जंगू वैद्य का भी काम जानता था।

रमेश ने अपने साथ कुछ उपयोगी और साधारण विज्ञान के यंत्र भी रखे थे। उसके पास एक छोटा-सा घड़ीनुमा वायु भार मापक यंत्र एनिराइड बैरोमीटर, एक घड़ीनुमा ताप मापक यंत्र, दो दूरबीन, दिशा सूचक यंत्र आदि वस्तुएं थीं। सब चीजें रमेश के ही पास थीं। वही इनका ठीक-ठीक उपयोग जानता था। इन चीजों में जंगू को दूरबीन बहुत पसन्द थी। उसे देख वह आश्चर्य में पड़ जाता था। पर उसे दूरबीन का उपयोग करना नहीं आता था। इसलिये उसे दिन में कई बार रमेश और वसन्त से मिन्नतें करनी पड़ती थीं। उसमें से देखना उसे बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन शाम को रमेश ने वसन्त और जंगू दोनों को रोकते हुए कहा, ''बैरोमीटर एक तूफान की सूचना दे रहा है। पिताजी ने लिखा है, यहां के तूफान बड़े तेज होते हैं। इसलिये हमें यहीं कहीं ठहर जाना चाहिये।''

जब जंगू ने यह बात सुनी तो वह घबरा गया। उसने कहा, "यदि तुम्हारी बात सच निकली तो हमें कुछ घंटे कठिनाई में बिताने पड़ेंगे।" फिर जंगू किसी ऐसी गुफा की खोज में निकल पड़ा जहां तूफानी रात बिताई जा सके। उसका कहना था कि यह मामूली तम्बू बिलकुल काम न देगा। वह करीब आधे घंटे बाद लौटा, उसने रमेश से कहा, "तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। जंगलों में एक प्रकार के फल होते हैं, जिसमें यह विशेषता होती है कि तूफान आने से कुछ समय पहले चटकने लगते हैं और उनकी आवाज होती है। लौटते समय मैंने वैसी ही आवाज सुनी है। पक्षी भी नीचे उड़ने लगे हैं। चलो, जल्दी चलो।"

रमेश और वसन्त फल फटने की बात सुनकर बड़े चकित हुये। रमेश ने अपनी डायरी में यह बात नोट कर ली। तीनों पहाड़ की ओर चल पड़े। शीघ्र ही वह गुफा पर पहुंच गये। वहां भीतर सामान रख दिया गया। टट्टुओं को एक तरफ बांध दिया गया।

सहसा हवा बहुत जोरों से चलने लगी। शाम हो गई थी। बादलों के घिर जाने से अंधेरा और भी बढ़ गया। बिजली चमकने लगी और फिर बारिश भी शुरू हो गई। जंगल में से बहती हुई हवा नाना प्रकार की आवाजें कर रही थी, धांय-धांय, सूं-सूं। गुफा में सामान रखकर वे लोग भी बैठ गये।

रमेश और वसन्त बहुत डरे हुये थे। वे अपनी-अपनी टार्च और पिस्तौल लिये बैठे थे। गुफा का भीतरी भाग टार्च की रोशनी में और भी भयावना प्रतीत हो रहा था। पता ही नहीं चल रहा था कि गुफा कितनी लम्बी है। बीच-बीच में पेड़ों की टहनियां लटकी हुई थीं। बड़ा भयंकर दृश्य था। वह बादलों की गर्जना, हवा की सूं-सूं की आवाज, झाड़ों पर गिरने वाले पानी की टप-टप आवाज, चारों तरफ बहता पानी और बीच-बीच में कीड़ों की किर्र-किर्र की आवाज सब मिलकर एक प्रकार का डरावना वातावरण पैदा कर रहे थे।

सहसा गुफा में पीछे की ओर से पानी के बहने की आवाज आने

लगी। देखते-देखते तीनों के नीचे से पानी बहने लगा। उनके कपड़े भीग गये। सब सामान भी गीला हो गया। वे तीनों गुफा के पत्थरों पर चढ़कर बैठ गये। ठंड से तीनों कांप रहे थे और वे रात भर उन पत्थरों से टिककर बैठे रहे और सुबह होते-होते वहीं पर बेसुध हो गये।

नन्हा सूरज

सुबह जब उनकी नींद खुली तो उन्होंने देखा कि सूरज बहुत ऊपर चढ़ आया है। उनके शरीर में बहुत दर्द हो रहा था। रात की सर्दी का उन पर असर हो गया था। बहुत मुश्किल से वे गुफा के बाहर निकले। यद्यपि धूप काफी तेज थी तब भी उन्हें आग की बहुत सख्त आवश्यकता महसूस हो रही थी। वे कुछ पकाना चाहते थे तथा ठंड को भी भगाना चाहते थे।

रमेश सामान की ओर गया। पर यह क्या? सारी वस्तुएं आपस में मिल गई थीं। जंगू की चकमक भी काम नहीं कर रही थी। तीनों इस समस्या पर विचार करने लगे। सहसा रमेश जंगू से बोला, "जंगू लो अब मेरी भी कारीगिरी देखो। मैं सूरज देव को आग जलाने के लिये यहां बुलाता हूं। तुम मेरी दूरबीन ले आओ।"

जंगू उसका मुंह ताकने लगा। वह दौड़कर दूरबीन ले आया। रमेश ने अपना टोप उठाया। यही एक ऐसी वस्तु थी जिसका कुछ भाग सूखा था। रमेश ने कुछ हिस्सा चाकू से काटकर भीतर का सूखे कागज का गूदा-सा निकाला। उसे एक साफ पत्थर पर रखा और जंगू से कहा, "जितनी भी कम गीली लकड़ियां मिलें उन्हें ले आओ।" जब लकड़ियां आ गईं तब रमेश ने अपनी दूरबीन का ऊपर का कांच निकाला। उसे सूरज की ओर रखकर सूर्य की किरणें उस सूखे कागज पर केन्द्रित की।

उस पर सूरज का एक छोटा-सा प्रतिबिम्ब पड़ने लगा। रमेश ने जंगू से कहा, "देखो, सूरज देव अपने लिये अब आग जलायेंगे।" थोड़ी ही

देर में सूखे गूदे से धुआं निकलने लगा। बड़ी सावधानी से फूंक-फूंक कर रमेश ने छोटी-सी ज्वाला भी निकाल ली। फिर जंगू ने देखते ही देखते एक बड़े पत्थर पर आग जलाई। सूरज देव की यह करामात जंगू के लिये बिलकुल नई थी। वह खुशी से, "सूरज देव की जय, सूरज देव की जय," चिल्ला कर नाचने लगा।

फिर जंगू को भोजन बनाने का काम सौंप रमेश और वसन्त आगे बढ़ने के लिये विचार करने लगे। रमेश ने पिता का पत्र निकाला। उसे ध्यान से पढ़कर उसने वसन्त से कहा, "देखो इसी नदी के किनारे अभी हमें पांच मील और जाना है। इसके बाद हमें उत्तर की ओर मुड़ना है। वहां मुड़ने पर हमें एक ऊंचा पर्वत शिखर दिखाई देगा। रात के समय वह शिखर मनुष्य के सिर के समान दिखाई देता है। यही इसकी पहचान है। इसके पास हमें दो छोटे रास्ते दिखाई देंगे। एक पूर्व की ओर जाता है और दूसरा वायव्य (पश्चिम और उत्तर दिशाओं का कोण जिसका अधिपति वायु देवता माना गया है) की ओर। इस पत्र में साफ-साफ लिखा है कि यदि पूर्व के मार्ग से गये तो ऐसे भयंकर स्थान में पहुंच जाते हैं जहां से वापस आने का मार्ग मिलना असम्भव ही है। अगर मिला भी तो कम से कम दो तीन माह भटकने के बाद। आसपास के पहाड़, जंगल आदि बहुत भयानक व खतरनाक हैं। दूसरा वायव्य का रास्ता उस कांचन गुफा की ओर जाता है। इस रास्ते पर भी एक खतरा है क्योंकि यहां के रहने वाले कुछ जंगली लोग किसी का वहां आना पसन्द नहीं करते। इसलिये सम्भल कर जाना पड़ेगा।"

इतने में जंगू ने खाना तैयार होने की सूचना दी। खा-पीकर वसन्त कहने लगा, "देखो रमेश, मुझे एक उपाय सूझा है। मैं अभी जाकर जंगू की सहायता से कुल्हाड़ी से कुछ छोटे-छोटे वृक्ष काटता हूं। इन्हें बांधकर एक बेड़ा बनाता हूं। और फिर हम लोग बारी-बारी से इस बेड़े पर सवार होकर नदी में आगे चलेंगे। जब एक बेड़े पर सवार होगा तब बाकी दो किनारे पर चलेंगे। बड़ा मजा आयेगा।" रमेश कुछ न बोला।

सांयकाल तक लट्ठों को बांधकर एक छोटा-सा बेड़ा बना लिया गया। वसन्त तैरने और नाव को संभालने में बड़ा चतुर था। बेड़ा किनारे पर बांधकर छोड़ दिया गया। अभी उनकी रात के तूफान की थकावट दूर न हुई थी। इसलिए तम्बू लगाकर बारी-बारी से पहरा देते हुये वे सो गये।

अज्ञात दूत

करीब आधी रात बीत गई थी। वसन्त पहरा दे रहा था। कभी-कभी जंगली जानवरों की विचित्र आवाजों से सन्नाटा भंग हो जाता था अन्यथा चारों और सुनसान था। वसन्त कुछ ऊंघ-सा रहा था। उसके हाथ में टार्च थी और पिस्तौल भी।

सहसा वह चौंक पड़ा। बाहर, बहुत दूर किसी के दौड़ने की आवाज आ रही थी। उसने सोचा, कोई जंगली जानवर घूम रहा होगा, पर धीरे-धीरे वह आवाज उनके तम्बू की ओर बढ़ती प्रतीत होने लगी। अभी वह आवाज लगभग 500 मीटर दूर थी। बीच-बीच में एक प्रकार की विचित्र, कर्कश सीटी सुनाई देती थी। अब वसन्त को पक्का विश्वास हो गया, कि यह कोई जंगली जानवर नहीं है और यदि है भी तो कोई दो पैर वाला है। वह घबरा गया।

उसने जंगू को जगा कर आवाज के बारे में बताया। जंगू ध्यान से सुनने लगा। दो-तीन बार उसने वह सीटी सुनी। फिर वह एकदम उसी प्रकार से सीटी बजाते हुये बाहर निकल गया। वसन्त की समझ में कुछ नहीं आया। इस हड़बड़ी में रमेश भी उठ बैठा। अब वसन्त और रमेश दोनों अपनी-अपनी पिस्तौलें ले जंगू की प्रतीक्षा करने लगे। वह सोच रहे थे कि जंगू न मालूम क्या खबर लाता है।

सहसा दो व्यक्ति तेजी से उनके तम्बू की ओर बढ़ते हुये दिखाई दिये। वे करीब 25 गज की दूरी पर होंगे कि तभी वसन्त ने अपनी पिस्तौल

उनकी ओर तान दी और डांटकर पूछा, "कौन है?" साथ ही टार्च का प्रकाश भी फेंका। देखा, जंगू खिलखिलाकर हंस रहा था। अब कोई डर की बात नहीं थी। पास आने पर रमेश और वसन्त ने उस दूसरे व्यक्ति को पहचाना। वह जंगू के पिता थे।

सब तम्बू के भीतर आ गये। रमेश ने जंगू के पिता से पूछा, "आप यहां कैसे? हम लोग तो बिलकुल डर गये थे।" जंगू के पिता ने कहा, "तुम्हारी मां के कारण मुझे यहां बेमौके आना पड़ा। वरना मैं भला कब चाहता था आना। अच्छा हुआ, जंगू ने मेरी सीटी पहचान ली, नहीं तो तुम लोग तो मुझे मार ही डालते।" अब वसन्त को समझ आया कि जंगू सीटी सुनते ही एकदम क्यों भाग खड़ा हुआ था।

रमेश ने व्यग्रता से पूछा, "क्यों? माताजी मजे में तो हैं न? साफ-साफ बताइये न क्या बात है?"

"मैं क्या कहूं, तुमको यह चिट्ठी ही सब हाल बता देगी।" उन्होंने एक पत्र निकाल कर रमेश को दिया। रमेश ने तुरन्त अपनी मां के हस्ताक्षर पहचान लिये। जल्दी से चिट्ठी खोली और एक ही सांस में पूरी पढ़ डाली। फिर वसन्त की ओर चिट्ठी फेंक कर हंसते हुये कहा, "देखो, मेरा दांव लग गया है। सेठ जाल में फंस गया है।" वसन्त चिट्ठी पढ़ने लगा।

प्रिय रमेश,

मैं बहुत डर रही हूं। कल मुझे वही सेठ जनकपुर में दिखाई दिया। उसके साथ और भी कई लोग थे। उसने मुझे नहीं पहचाना, लेकिन मैंने उसे पहचान लिया। जंगू के पिता ने पता लगाया और मालूम किया है कि वह तुम्हारा पीछा करने आया है। वह भी उस कांचन गुफा में पहुंचना चाहता है। तुम चाहो तो वापस लौट आओ। वह दुष्ट तुम्हें अवश्य सतायेगा। वैसे तुम्हारी मर्जी जो चाहे वही करो। मैंने सूचना दे देना उचित समझा।

रमेश कुछ देर तक विचार करता रहा। अंत में उसने एक पत्र लिखकर जंगू के पिता को दिया और कहा, "मां को यह पत्र दे देना और कहना सेठ

को मैंने ही बुलवाया है। चिन्ता करने की कोई बात नहीं।"

जंगू के पिता चले गये। रमेश और वसन्त आगे की योजना बनाने लगे। रातों-रात बैठकर रमेश ने कांचन गुफा के मार्ग का दूसरा नकली नकशा तैयार कर लिया जिसमें उसने उस मार्ग का नकशा बनाया था जिसका अनुसरण करने से उसके पिता ने मना किया था और जो खतरनाक स्थान में ले जाता था।

वसन्त का साहस

सुबह के वक्त यह दल फिर आगे की ओर चल पड़ा। वसन्त लट्ठों को बांधकर बनाए हुए बेड़े पर सवार था। रमेश ने ठीक से तैरना न आने के कारण बेड़े पर बैठने से इनकार कर दिया और जंगू अपने टट्टुओं को छोड़ना नहीं चाहता था। आखिर इसी प्रकार यह पार्टी आगे बढ़ी। बीच-बीच में रास्ते में किनारे पर पत्थर, झाड़ आदि आ जाने से रमेश और जंगू को बेड़ा दिखाई नहीं देता था।

इस प्रकार करीब तीन चार मील का रास्ता तय हो गया। वसन्त को सबसे ज्यादा मजा आ रहा था। वह अपनी पतवार से बड़ी कुशलता से बेड़े को संभाले हुए था। रमेश सबसे आगे इस फिराक में निकल आया था जिससे कि मनुष्य के सिर वाला वह पर्वत शिखर उसे दिखाई दे जाये और वे लोग उत्तर दिशा की ओर चल सकें।

उसे मालूम था कि पर्वत शिखर नदी से करीब बीस मील दूर होने के कारण साधारणतया दिखाई न देगा। इसीलिए वह अपनी दूरबीन से छानबीन कर रहा था। इस बीच जंगू और वसन्त आगे निकल गये थे।

सहसा रमेश को शिखर दिखाई दिया। अभी वह केवल दूरबीन से ही दिखाई दे रहा था। इसी स्थान से शिखर की ओर बढ़ना था। उसने सोचा जंगू और वसन्त को रोक लूं। कुछ सोचकर उसने वैसा न किया। पार्टी

को आगे बढ़ने दिया। अब नदी का मार्ग कुछ पहाड़ी हो चला था। नदी एक जगह मुड़ गई थी। वसन्त का बेड़ा ओझल हो गया था। नदी के अगले हिस्से पर जंगू पहले ही पहुंच गया था। न मालूम वह क्यों जोर-जोर से चिल्ला रहा था। रमेश तेजी से दौड़ता हुआ वहां पहुंचा।

उस स्थान पर पहुंचते ही जंगू के चिल्लाने का कारण समझने में रमेश को देर न लगी। वह भी बहुत डर गया। बात यह थी कि इस स्थान पर नदी ने एक जल-प्रपात (पहाड़ों आदि में बहुत ऊंचाई से गिरने वाला पानी का झरना) का रूप ले लिया था और पानी करीब चालीस फुट नीचे पत्थरों पर गिर रहा था। यद्यपि आवाज अधिक जोर की नहीं थी किन्तु पानी इतनी तेजी से गिर रहा था कि वह दूध में उठते झाग के समान लग रहा था। दूर वसन्त अपने बेड़े में चला आ रहा था। उसको जल-प्रपात का कुछ भी आभास न था। जंगू जोर से चिल्ला कर और इशारों से उसे रुक जाने के लिए कह रहा था। लेकिन उसकी समझ में कुछ न आया। अब रमेश ने पूरी ताकत से चिल्ला कर वसन्त को सामने के खतरे के विषय में चेतावनी दी। वसन्त समझ गया, किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वह नदी की तेज धार में पहुंच चुका था। बेड़ा रोके न रुकता था। उसने एक बार सोचा कि वह पानी में कूद जाए और तैरकर किनारे पर पहुंच जाए पर वहां की चट्टानों और तेज धारा को देखकर उसकी हिम्मत नहीं हुई। बेबस वसन्त की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? रमेश और जंगू भी हतप्रभ से खड़े थे। वे कर ही क्या सकते थे।

आखिर वसन्त ने अन्तिम निश्चय किया। उसने अपना बेड़ा बड़ी कुशलता से धारा में ही उस ओर बहने दिया जहां पर एक चट्टान का कुछ भाग बाहर की ओर निकला हुआ था। उसे लगा कि उस चट्टान को पकड़ा जा सकता है। यदि ऐसा सम्भव हुआ तो उसे कुछ देर के लिए उस चट्टान का सहारा अवश्य मिल सकता था। पर धारा के उस वेग में चट्टान को पकड़ना असम्भव-सा जान पड़ता था। यदि पासवाली चट्टान से टकराकर उसका बेड़ा कुछ क्षण के लिए रुकता है, तो अवश्य ही उसे यह

मौका मिल सकता है। उसे भाग्य पर भरोसा था। बेड़ा चट्टान से टकराया, पलभर के लिए रुका, फिर उसने चक्कर खाया और आगे खाई की ओर बढ़ने लगा।

इतना समय वसन्त सरीखे कुशल युवक के लिये काफी था। उसने चट्टान के निकले हुये हिस्से को पकड़ लिया। बेड़ा तेजी से आगे बढ़ा और देखते ही देखते प्रपात के तेज प्रवाह में विलीन हो गया।

रमेश ने डर के मारे थोड़ी देर के लिये आंखे ही मूंद लीं। फिर जब उसने वसन्त की चतुराई और साहस को देखा तब उसकी कुछ हिम्मत बंधी। अब वह यह सोचने लगा कि वसन्त को कैसे बचाया जाये। इस बीच जंगू चुपचाप बैठा न रहा था। वह दौड़कर एक टट्टू पर से लम्बी रस्सी उठा लाया और उसका फंदा बनाकर बड़ी कुशलता से उसे वसन्त की ओर फेंका। पहली बार वह असफल रहा पर दूसरी बार रस्सी उस चट्टान में जाकर फंस गई।

वसन्त की भी जान में जान आई। साथी मुझे बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं यह देख उसे कुछ ढारस बंधा। वह बड़ी कठिनाई से चट्टान के ऊपर चढ़ा। चट्टान पर अधिक देर तक ठहरना असम्भव था क्योंकि कभी-कभी पानी चट्टान के ऊपर तक पहुंच जाता था। वसन्त ने तुरन्त रस्सी का फंदा अपनी कमर में फंसा लिया। इसी बीच रमेश हिम्मत करके पास ही के पेड़ पर चढ़ने लगा। उसकी एक डाल ठीक उस चट्टान तक पहुंच रही थी। लेकिन डाल के छोर से चट्टान करीब बीस फुट नीची थी। रमेश पेड़ पर चढ़ने में बहुत कुशल था। कंधे पर लम्बी रस्सी लटका कर वह पेड़ पर चढ़ गया और उस पर बड़ी सावधानी से सरकने लगा।

करीब पन्द्रह मिनट में वह चट्टान के ठीक ऊपर पहुंच गया। वसन्त भी यह देख रहा था तथा चट्टान और जंगू की रस्सी का सहारा लिये क्षण-क्षण गिन रहा था। ये पन्द्रह मिनट उसे एक युग के बराबर लग रहे थे। रमेश ने रस्सी के बीच-बीच में गांठें बांधकर उसे नीचे छोड़ दिया। उसका नीचे का छोर वसन्त तक पहुंच गया। दूसरा छोर उसने डाली से

बांध दिया। वसन्त जैसे फुर्तीले और बलिष्ठ स्काउट के लिये इतना ही पर्याप्त था। उसने रस्सी पकड़ ली और उसके सहारे धीरे-धीरे ऊपर चढ़ गया। दोनों साथी एक दूसरे से गले मिले। इतने में जंगू भी उनके पास दौड़कर आ गया। तीनों बहुत ही राहत महसूस कर रहे थे।

पीछा

वसन्त इतना थक गया कि वह वहीं लेट गया। रमेश पसीने से तर था। यह उसकी यात्रा की पहली कठिन परीक्षा थी। रमेश ईश्वर को धन्यवाद देने लगा कि उसकी कृपा से एक भारी दुर्घटना टल गई। वह सोच रहा था कि अगर वसन्त को कुछ हो जाता तो क्या वह कांचन गुफा की ओर बढ़ने की इच्छा करता। वसन्त के लाख कहने पर भी रमेश इस दुर्घटना का कारण स्वयं को ही मान रहा था।

उसे चाहिये था कि वह शिखर के दिखते ही उत्तर दिशा की ओर मुड़ जाता, लेकिन उसने यह सोचकर कि सेठ को गलत मार्ग पर ले जायें, इस मार्ग पर ही कुछ दूर तक और चलने की सोची थी।

एक घंटा उन्होंने वहीं विश्राम किया। प्रपात का दृश्य बड़ा ही मनोहर था। दूध के सदृश्य शुभ्र फेन वाला पानी और साथ ही धुएं के रूप में ऊपर उठते हुए असंख्य जलकण एक अद्‌भुत दृश्य उत्पन्न कर रहे थे। उन जल बिन्दुओं में सूर्य के प्रकाश से रह-रह कर बनता इन्द्रधनुष अपने रंगों से मन मोह लेता था। वसन्त और रमेश सोचने लगे कि यह भाग्य ही का खेल है जो आज वे इस अनोखे दृश्य का आनन्द लूट रहे हैं। यदि वह दुर्घटना हो जाती तो इस दृश्य का क्या होता? ठीक ही है कि किसी भी वस्तु का सुख भोगना मनुष्य मात्र की मन-स्थिति पर निर्भर करता है।

जंगू इस बीच पास ही की पहाड़ी पर भटकने चला गया था। वहां पाया जाने वाला एक प्रकार का जंगली फल उसे बहुत प्रिय था। उसी की

खोज में वह गया था। सहसा वह दौड़ता हुआ आता दिखाई दिया। उसके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि वह बहुत डरा हुआ है। वह पीछे की ओर बार-बार इशारा कर रहा था।

बड़ी देर बाद रमेश को समझ आया कि पांच व्यक्ति दूर पहाड़ी के उस ओर टट्टुओं पर सवार हो उन लोगों का पीछा कर रहे हैं। यदि इसी प्रकार वे चलते रहे तो वे लोग एक घंटे तक यहां पहुंच जायेंगे।

यह एक नया संकट था। रमेश समझ गया कि यह वही सेठ और उसकी पार्टी होगी। वह इनके पीछा करने की उम्मीद तो करता था पर इतनी शीघ्र नहीं। अब बहुत सोच-विचार कर काम करने की आवश्यकता थी। वसन्त ने कहा, "देखो सेठ की यही कोशिश रहेगी कि वह हम लोगों को पकड़कर मार डाले और फिर उसे इस जंगल में रोकने वाला है भी कौन? हमारे पास हथियार हैं तो उसके पास भी हैं। हम लोग केवल तीन हैं और उसके साथ चार लोग हैं। एक बात तो अपने फायदे की है कि हम कुछ आगे बढ़ आएं हैं। अब इस प्रकार की चाल चलनी है कि हम लोग तो सेठ के चंगुल में न फंसे किन्तु यह जाली नकशा उसे मिल जाये। और वह इसी मार्ग से आगे बढ़ता जाये। हमें इतना समय मिलना चाहिये कि जब सेठ को यह जाली नकशा मिले तब हम उस शिखर के पास पहुंचकर वायव्य के रास्ते पर बढ़ जायें। सेठ को यह नकशा पूर्व की ओर ले जाने में मदद करेगा।"

अब रमेश को कुछ भय प्रतीत होने लगा। वह बोला, "यह जंगल है। यहां जिसके पास ताकत होगी वही जीतेगा। सेठ और उसके चार साथी हमें पकड़ लें और मार भी डालें तो भी यहां उन्हें रोकने वाला कौन है? यद्यपि हम लोग सब तरह से तैयार हैं तब भी हैं तो हम छोटे ही। इसलिये हमें चालाकी से काम निकालना चाहिये।"

आखिर रमेश ने कहा, "हम लोग अभी इन्हीं टट्टुओं पर जितनी दूर हो सके चलते हैं जिससे उन्हें कुछ दूर तो भटकना पड़ेगा। फिर सोचते हैं कि क्या करना है?"

वे तीनों टट्टुओं पर सवार हो, जितनी जल्दी हो सकता था भाग चले। उन्हें एक ऐसा स्थान नजर आया जहां रास्ता पहाड़ी के पास से मुड़ जाता था। पास में घना जंगल था। नीचे की ओर छिपने के लिये रमेश ने एक स्थान खोज निकाला। बस, यहीं पर उसने अपनी योजना जंगू और वसन्त को समझा दी। इसमें जंगू को बहुत कार्य करना था। जंगू भी इस योजना को सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ और अपना कार्य करने के लिये तैयार हो गया। उसे इस बात का दुख था कि उन्हें अपने दो टट्टुओं से हाथ धोना पड़ेगा।

आखिर वे तीनों तैयार होकर उस पहाड़ी से करीब तीन सौ मीटर पहले सेठ के रास्ते की ओर रुक गये। रमेश अपनी दूरबीन से देखता जाता था। सहसा उन्होंने तीन आदमियों को टट्टुओं पर आते देखा। रमेश की समझ में न आया कि पांच के तीन कैसे हो गये? लेकिन अब सोचने का समय न था। वे करीब आते जा रहे थे।

ये लोग आगे की ओर भागे। इतने में रमेश के टट्टू पर से एक थैली गिर पड़ी। रमेश उसे उठाने के लिये रुका लेकिन फिर भाग खड़ा हुआ।

इतने में सेठ और उसके दो साथियों ने चिल्ला कर और भी जोर से पीछा करना आरम्भ कर दिया। पिस्तौल भी चलाई, किन्तु वे काफी दूर निकल गये थे। सेठ ने देखा कि रमेश और उसके साथी थैली छोड़कर भाग गये थे और पहाड़ी के पास वाले रास्ते की ओर मुड़ गये थे। इतने में सेठ और उसके साथी उस थैली के पास आ गये। सेठ के कहने पर वे वहां रुके और थैली को उठा लिया। अब वे फिर पीछा करने लगे।

इधर रमेश और उसके साथी पहाड़ी के पास पहुंचे। रमेश और वसन्त टट्टू से उतर पड़े। अब जंगू अपने टट्टू पर सवार होकर तथा वसन्त का खाली टट्टू ले उस रास्ते से आगे बढ़ गया। रमेश और वसन्त अपने टट्टू सहित पहले से ही ढूंढ़ी हुई घनी झाड़ी के भीतर सुरक्षित स्थान में छिप गये। जंगू आगे बढ़ रहा था। सेठ और उसके साथी अभी दूर ही थे। वे और जोर से पीछा करने लगे। जब वे काफी दूर निकल गये तो

जंगू ने दोनों टट्टुओं की लगाम काट दी और दो बड़े कांटे लेकर उनकी पीठ पर जोर से चुभो दिये। टट्टू बेतहाशा भागने लगे।

शाम हो चली थी इस कारण सेठ और उसके साथियों को केवल टट्टुओं की छाया दिखाई दे रही थी। जंगू पास की झाड़ी में छिप गया। सेठ और उसके साथी तेजी से टट्टू दौड़ाते हुए वहां से निकल गये। वे किसी भी तरह भागती हुई पार्टी को शाम होने से पहले पकड़ लेना चाहते थे।

जंगू अब तीर जैसा दौड़ता हुआ वापस लौटा। वह रमेश और वसन्त से आ मिला। रमेश अपने टट्टू पर समान लादकर चलने को तैयार था। वे वापस उसी स्थान के लिए चल पड़े जहां से उस निश्चित शिखर की ओर मार्ग उत्तर की ओर मुड़ता था। रमेश उन बचे हुये दो सेठ के साथियों के बारे में सोच रहा था।

उसका कहना था कि वे लोग रास्ते में अवश्य मिलेंगे। अच्छा हो, यदि उन्हें कुछ मजा चखाया जाये और उनका माल और टट्टू छीन लिये जायें।

गुफा के रास्ते पर

रमेश और जंगू फूंक-फूंक कर कदम रख रहे थे। जंगू उनका स्काउट था। वह सबसे आगे चला जाता और खबर लेकर लौट आता था। कुछ दूर आगे जाने पर उसी पहले प्रपात के पास एक झाड़ी के नीचे दो आदमी आगे बढ़ने की तैयारी करते हुए मिले। रमेश समझ गया कि वे ही सेठ के बाकी दो साथी हैं। अब रमेश ने एक उपाय सोचा। उसने जंगू से कहा, "इस समय कोई ऐसी चाल चलो कि ये लोग डर जायें, फिर इन्हें पकड़ लेना सरल होगा।"

जंगू गायब हो गया। सहसा पास की झाड़ी में से शेर की दहाड़ सुनाई

देने लगी। पहले तो रमेश और वसन्त डर गये फिर जंगू का कौशल याद कर उनका डर काफूर हो गया।

दोनों सेठ के साथी और टट्टू घबराकर दायें-बायें देखने लगे। शेर की गर्जना और भी तेज होती जा रही थी। वे दोनों सोच ही रहे थे कि क्या किया जाये कि इतने में रमेश और वसन्त अपनी पिस्तौल लिये दौड़े। रमेश ने चिल्ला कर कहा, "हाथ ऊपर करो।" बेचारे घबराये हुए तो थे ही, उन्होंने फौरन हाथ ऊपर कर लिये और दीन स्वर में बोले, "हमें इस शेर से बचाओ, हमें इस शेर से बचाओ।" रमेश पिस्तौल से इन दोनों को निशाना बनाये खड़ा रहा। इतने में वसन्त ने इन दोनों के हाथ-पैर कस कर रस्सी से बांध दिये और मुंह में कपड़ा ठूंस दिया। जंगू भी बाहर निकल आया। रमेश और जंगू अपने लिये टट्टू लेकर और सेठ के सामान में से कुछ आवश्यक सामान बटोरकर उन दोनों को झाड़ की एक डाल से बांध कर आगे चल दिये।

करीब एक घंटे बाद ये तीनों उस शिखर की ओर बढ़ रहे थे। चांदनी रात थी, मनुष्य के सिरवाला शिखर साफ-साफ दिखाई दे रहा था। वे उस शिखर के पास पहुंच गये। रमेश का कहना था कि चाहे कुछ भी हो आगे बढ़ना ही है नहीं तो सेठ इस शिखर तक पहुंच जायेगा। फिर एक बार पूर्व के रास्ते की ओर देखकर रमेश और उसके साथी वायव्य की ओर चल पड़े।

करीब दस मील दूर जाकर उन्होंने तम्बू तान दिया। इधर सेठ और उसके दो साथी खाली टट्टुओं का पीछा करते-करते थक गये थे। बेलगाम टट्टू बेतहाशा भाग रहे थे। आखिर सेठ और उसके साथियों ने उनका पीछा करना छोड़ दिया। वे रुककर मिली हुई थैली की जांच करने लगे।

सहसा सेठ उछल पड़ा। वह बोला, "जो मैं चाहता था, वह मिल गया, भाग जाने दो उन छोकरों को। यह कांचन गुफा के मार्ग का नकशा है। बेवकूफ, हमें बुद्धू बनाना चाहते थे, इसलिये इस रास्ते पर ले आये।

चलो हम लौट चलें और अपने साथियों को भी बता दें।" वे लौटे लेकिन उनके साथियों का कहीं पता न चला। अंत में वे लोग उसी स्थान पर एक जगह सुस्ताने लगे।

सहसा पेड़ की ऊपरी डाल से किसी के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। उनमें से एक ने अपने मुंह का कपड़ा किसी प्रकार निकाल लिया था। पहले तो सेठ और उसके दोनों साथी डर गये। लेकिन ध्यान से देखने पर उन्होंने अपने आदमियों को पहचान लिया। उन दोनों ने सेठ को सब हाल कह सुनाया। सेठ ने कहा, "वे कितने भी चालाक क्यों न हों, अब तो मेरे हाथ में नकशा आ ही गया है। हम लोग उन्हें पकड़ ही लेंगे।"

दूसरे दिन सेठ और उसकी पार्टी उसी शिखर के पास पहुंच कर बड़ी खुश हुई। वे नकशे में बताये हुये पूर्व के मार्ग पर चल पड़े। बेचारों ने स्वप्न में भी न सोचा होगा कि वे कांचन गुफा को छोड़कर मृत्यु गुफा में जा रहे हैं।

गुफा का भूत

सुबह उठते ही रमेश और उसके साथी फिर अपने रास्ते पर आगे बढ़ चले। वे लोग इस बात से बहुत खुश थे कि किस प्रकार उन्होंने सेठ और उसके साथियों को बेवकूफ बना दिया था। वे अब निश्चिंत थे।

नकशे में बताये गये चिह्नों को देखते हुए वे चार दिन तक उसी रास्ते से आगे बढ़ते गये। एक दिन सुबह, दूर से एक पर्वत श्रेणी दिखाई देने लगी। उसके शिखर तो बर्फ से ढके थे लेकिन नीचे का अधिकांश भाग घने वनों से ढका था। रमेश इस पहाड़ को देखकर कहने लगा, "लो, यही वह पहाड़ है, पिताजी के लिखे अनुसार इसी पहाड़ को लांघना असम्भव है, क्योंकि जंगल इतने घने हैं कि उनको पार कर ऊपर चढ़ना बहुत मुश्किल है फिर ऊपर की चोटियां बर्फ से ढकी हैं। सिर्फ कांचन

गुफा के रास्ते से ही उस ओर जा सकते हैं।''

फिर रुककर उसने वसन्त और जंगू से कहा, ''तुम लोग भी आसपास देखते जाओ। अब हमें एक सूखी नदी की घाटी में से होकर ऊपर चढ़ना है। वह यहीं-कहीं आसपास ही है।''

वे तीनों तीन ओर चल दिये। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वह घाटी मिले या न मिले, हम लोग तीन घंटे बाद लौटकर फिर यहीं मिलेंगे। रमेश ने वसन्त को समझाया था कि वह संभलकर जाये और किसी खतरे में न पड़े।

तीन घंटे बाद जब रमेश आया तो देखा कि जंगू पहले से ही वहां मौजूद है। वसन्त का कोई पता न था। आधा घंटा और निकल गया। अब उन दोनों को चिन्ता होने लगी। उन्हें लग रहा था कि वसन्त किसी न किसी आफत में पड़ गया है।

जंगू उसे ढूंढ़ने जाने ही वाला था कि वसन्त हांफते-हांफते आ पहुंचा। वह बहुत थक गया था। उसने जो कहानी सुनाई, उसे सुनकर रमेश बहुत खुश हुआ। वसन्त ने कहा, ''यहां से मैं ईशान (पूर्व और उत्तर के बीच का कोना) की ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर मुझे एक छोटा-सा बड़ा ही सुन्दर जानवर दिखाई दिया। मैं उसका पीछा करने लगा। मैं उसके जैसे तेज दौड़ नहीं सकता था। मेरे पास पिस्तौल थी पर मैं उसे मारना नहीं चाहता था। मैं पीछा करता ही गया। वह पशु शीघ्र ही एक पथरीले मार्ग पर दौड़ने लगा। मालूम होता था कि वह पुरानी सूखी हुई नदी का मार्ग रहा होगा। मैंने जानवर का पीछा करना छोड़ दिया। और वहां कुछ निशान बना दिये। परन्तु लौटते समय रास्ता भूल गया था। भटकते-भटकते ही यहां पहुंचा हूं। इसी से मुझे विलम्ब हुआ है।''

रमेश ने वसन्त की पीठ ठोकी और तीनों टट्टुओं के साथ उसी मार्ग पर चल पड़े। यह सचमुच नदी ही का मार्ग मालूम पड़ता था। बीच-बीच में पत्थर, रोड़े अटके हुए थे। चलते-चलते मार्ग ऊपर को चढ़ता जाता था। अंत में वे उस पहाड़ के नीचे आ पहुंचे। अब मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा हो

चला था। और अधिक चढ़ाई भी आ गई थी।

करीब चार घंटे बाद संध्या होते-होते वे तीनों उसके छोर पर जा पहुंचे। यहां एक गुफा-सी दिखाई देने लगी। इसका मुख करीब छः फुट चौड़ा था। और आसपास वृक्ष भी थे। रमेश गुफा को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। यही कांचन गुफा का मार्ग था। अब रमेश आगे बढ़ने को उत्सुक था। वसन्त और जंगू के कहने से रात बाहर ही काटने की योजना बनाई गई।

वे खूब आराम की नींद सोये। सुबह तीनों साथी गुफा में प्रवेश करने की तैयारी करने लगे। उन्होंने अपनी-अपनी पिस्तौलें और टार्च लीं। वसन्त को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रमेश एक लंबे बांस की मशाल लेकर चल रहा था। उसी के कहने पर जंगू ने बहुत-सी रस्सियां कंधे पर डाल ली थीं।

वसन्त बड़ी शान से आगे बढ़ने लगा। यह गुफा भीतर की ओर से चौड़ी हो जाती थी। दूर जाकर गुफा का भीतरी भाग बहुत अंधकारमय दिखने लगा। टॉर्च के प्रकाश में उन्होंने देखा कि वह अब अन्दर की ओर कुछ संकरी होती जा रही थी और जमीन से उसकी ऊंचाई भी नीची होती जा रही थी।

सहसा रमेश ने वसन्त को आगे बढ़ने से रोक दिया। जंगू की समझ में न आया कि क्या बात है। वसन्त भी कुछ न समझा और चिल्ला कर कहने लगा, ''क्या अपने ही को बहादुर समझते हो, जो मुझे आगे बढ़ने से रोकते हो?''

''वसन्त, नाराज न हो, शायद मेरा अनुमान ठीक हो। ठहरो, देखो, अभी सब मालूम हो जायेगा।'' तब रमेश ने मशाल को जलाया। जब वह पूरी तरह से जल गई तब वह उसे उठा कर गुफा के भीतर कुछ दूर तक चला।

फिर बांस की मशाल को छत की ओर करके बांस को बहुत धीरे-धीरे नीचे लाना शुरू किया। मशाल जब जमीन से चार फुट की ऊंचाई पर रह

गई, तभी वह बुझ गई। रमेश ने फिर एक बार उसे जलाया और वैसा ही किया। वह फिर बुझ गई। अब जंगू डर गया और कहने लगा, "इस गुफा में भूत है।" वसन्त भूत की बात मानने को तैयार न था। पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है। रमेश ने उन्हें समझाया, "गुफाओं में नीचे की ओर कभी-कभी दूषित वायु जिसे कार्बन डाइऑक्साइड कहते हैं, जम जाती है। यह भारी होने के कारण पुराने कुओं में भी रहती है। इसमें यदि मनुष्य प्रवेश करे तो शुद्ध वायु के अभाव के कारण वह एकदम बेहोश हो जाता है। अधिक देर तक रहने से मर भी जाता है।

"इस वायु के अस्तित्व का पता इसमें जलती चीज ले जाने से लग जाता है। इसमें कोई पदार्थ जल नहीं सकता। देखा वसन्त, अभी आगे बढ़ते तो शायद तुम बेहोश होकर गिर पड़ते और तुम्हें जो लेने जाता, उसकी भी वही हालत होती।"

अब वसन्त की समझ में आया। उसने रमेश की दूरदर्शिता की प्रशंसा की। जंगू को ये बातें ठीक से समझ नहीं आई। उसने कहा, "तुम लोग मानो या न मानो, यह गुफा के भूत की ही करामात है। मैं तो आगे नहीं बढ़ूंगा।"

निराशा और आशा

रमेश ने वसन्त से कहा, "पिताजी के कथनानुसार आगे जाने पर गुफा की छत में एक छिद्र नजर आयेगा। उसमें से निकलकर ऊपर जाने पर पास ही में ऊपर चढ़ती हुई करीब आधा मील लम्बी सुरंग है। यह दूषित वायु चार फुट तक है। इसलिये हममें से सबसे जो लंबा हो, वही आगे बढ़े और गुफा की छत का निरीक्षण करे। जंगू तो सबसे छोटा है और वह भूत से डर भी गया है। तुम सबसे लंबे हो और भूत से डरते भी नहीं हो

इसलिये तुम्हीं आगे बढ़कर पता लगाओ। डरो नहीं।

"दुर्घटना से बचने का मैंने एक उपाय ढूंढ़ निकाला है। मैं यह रस्सी तुम्हारी कमर से बांध देता हूं। तुम निडर होकर आगे बढ़ जाओ, सिर्फ एक सावधानी रखना कि किसी हालत में भी नीचे नहीं झुकना और तुम यदि बेहोश हो भी जाओगे तो मैं इस रस्सी से तुम्हें खींच लूंगा।"

रस्सी बंधवाकर और टॉर्च लेकर वसन्त आगे बढ़ गया। उसने टॉर्च का प्रकाश चारों ओर फेंका। वह आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था, पर उसे किसी भी प्रकार का कोई छेद न दिखा। उसने चिल्ला कर रमेश से कहा, "यहां तो मुझे कुछ भी नहीं दिखाई देता।"

रमेश ने कहा, "एक बार फिर ठीक से देखो।" अब वसन्त को साथ की दीवार में कुछ गड्ढे दिखाई दिये। वसन्त ने उनमें पैर रखकर साथ की दीवार का सहारा लेकर ऊपर चढ़ने की कोशिश की मगर असफल रहा।

रमेश ने कहा, "अच्छा वापस आ जाओ।" वसन्त ऊपर से कूदा, किन्तु वह दूषित वायु की बात बिलकुल भूल गया था। इसलिये कूदते ही वह बैठ-सा गया। उसका सिर चक्कर खाने लगा। उसे लगा वह बेहोश हो जायेगा। रमेश उसके लिये तैयार था। उसने बड़ी सावधानी और शीघ्रता से उसे ऊपर उठाया।

बाहर खुली हवा में आते ही वसन्त होश में आ गया। इस घटना से जंगू का डर और भी बढ़ गया। उसने कहा, "मैं कहता था न, कि गुफा में भूत है। भूत से जीत पाना हंसी खेल नहीं है। तुम बड़े बहादुर हो जो भूत से लड़कर भी जिंदा रह गये।"

अब तो जंगू गुफा के दरवाजे पर जाने से भी डरने लगा। रमेश और वसन्त पत्र में बताये हुए छिद्र को न पाने से निराश हो गये। रमेश का कहना था, "या तो छिद्र किसी स्वाभाविक घटना द्वारा बंद हो गया है या पिताजी ने वर्षों पहले जानबूझकर बंद कर दिया है। कुछ भी हो, मैं उस पार जाने की कुछ न कुछ कोशिश अवश्य करूंगा। लेकिन इससे पहले मैं भी एक बार छत का ऊपरी भाग देख आता हूं। वसन्त की तरह रस्सी

बांधकर रमेश भी गया किन्तु उसे भी कुछ न दिखा। गुफा से बाहर आकर वे लोग अपने खाने-पीने के सामान की व्यवस्था करने लगे। दूसरे दिन फिर से गुफा का निरीक्षण करने का निश्चय किया गया। उस दिन रात को बड़ी जोर से हवा चली। इसलिये रमेश बहुत खुश था। उसका कहना था कि इस हवा से उस स्थान की दूषित वायु कम से कम कुछ समय के लिये अवश्य ही साफ हो गई होगी। यदि न भी हुई तो उसकी ऊंचाई बहुत ही कम होगी।

सुबह होते ही जंगू को बाहर छोड़ ये दोनों फिर अंदर घुसे। परीक्षा करने पर मालूम पड़ा कि वही दूषित वायु केवल 5-6 इंच की ऊंचाई तक बची थी। बड़ी कोशिश करने पर भी वे छिद्र का पता न लगा सके। आखिर हारकर वे बाहर आ गये और गुफा के दरवाजे के पास खड़े अपनी असफलता पर विचार करने लगे।

उस दिन दोपहर तक भी वे तीनों इसी प्रकार बैठे हुए थे। सहसा गुफा के भीतर से एक प्रकार की विचित्र आवाज आने लगी। रमेश और वसन्त दौड़ कर उस ओर भागे। आगे अंधेरा देखकर रुक गये। कुछ देर बाद जब उनकी आंखें अंधेरे में देखने की अभ्यस्त हो गईं, तब उन्हें मालूम हुआ कि नीचे कुछ पत्थर से गिर पड़े हैं। थोड़ी देर बाद फिर गुर्राने की आवाज आने लगी। ऐसा मालूम होने लगा, मानों कोई भेड़िये की जाति का जानवर गुर्राकर झपटने की तैयारी में है।

रमेश और वसन्त वापस आये और अपनी टॉर्च तथा पिस्तौल लेकर फिर चल पड़े। सावधानी से भीतर घुसकर रमेश ऊपर देखने लगा। उसने देखा, ऊपर की ओर एक कोने में एक दो पत्थर हट गये थे। और वहां एक छोटा-सा छिद्र हो गया था। उसी में से आवाज आती मालूम हो रही थी। रमेश वापस बाहर आ गया।

उसने वसन्त से कहा, "इस जानवर को वहां से निकल जाने दो। उसका वहां इस प्रकार आना अपने मार्ग का अस्तित्व साबित करता है। अन्यथा वह जानवर चालीस फुट ऊंचे उस छोटे से छिद्र के भीतर कैसे

आ सकता है? अब उस छिद्र को बड़ा करने का कार्य अपना है।

"हमें मार्ग मिलने की बहुत आशा है।"

गुफा में से

रमेश बड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। फिर वह एक कुल्हाड़ी और वसन्त को अपने साथ लेकर चल पड़ा। उसने दो मजबूत और लंबी डालें काटीं। इनके एक-एक छोर को नुकीला किया। वापस लौट कर उन्होंने गुफा में फिर प्रवेश किया। शाम होने में अभी दो घंटे बाकी थे। निरीक्षण करने पर मालूम हुआ कि अब दूषित वायु एक फुट तक ही है। इसलिये वे लोग बिना किसी डर के आगे बढ़ गये।

उस छत के साथ बने हुये छोटे छिद्र में उन्होंने बनाई हुई डाल का नुकीला हिस्सा जितना जा सकता था, डाल दिया। फिर उसके दूसरे छोर को रस्सी से बांधकर वे रस्सी को पकड़कर पास में खड़े हो गये। अब रमेश ने वसन्त से कहा, "वसन्त अपनी पूरी ताकत लगा कर रस्सी को खींचो।"

दोनों ने पूरी ताकत लगाकर रस्सी को खींचा। वह डाल लीवर का कार्य कर रही थी। पहले दो तीन मिनट तक तो कुछ न हुआ, उन्होंने फिर अपनी ताकत लगाई। अबकी बार चर्र-चर्र की आवाज हुई। इसके साथ ही गुफा के अंदर से पत्थर आदि के गिरने की बड़ी जोरदार आवाज हुई। डाल एकदम ही अपने स्थान से हट गई। इस झटके से वसन्त और रमेश नीचे गिर पड़े।

वे लोग घबरा गये। लेकिन उन्हें कोई चोट नहीं आई थी। जरा से हाथ-पैर छिले। वे पहले से ही दूषित वायु के वातावरण से बाहर खड़े थे। इसलिये उन्हें गिरने से कुछ नहीं हुआ।

जंगू का बुरा हाल था। वह नई आवाज सुनकर घबरा गया था। पर

रमेश और वसन्त ने उसे समझाकर धीरज बंधाया। दस मिनट तक वे लोग शांत रहे। गुफा के अंदर धूल ही धूल उड़ रही थी। करीब आधे घंटे बाद रमेश और वसन्त फिर भीतर गए। उन्होंने देखा कि गुफा की छत में ऊपर की ओर करीब 4 फुट व्यास वाला एक छिद्र हो गया है। रमेश ने सुरक्षित स्थान में खड़े होकर फिर से दूसरी डाल से आसपास की जगह को ठोककर अच्छी तरह से देख लिया कि अब कोई लुढ़कने वाला पत्थर तो नहीं बचा है। फिर शाम हो जाने के कारण उन दोनों ने बचा हुआ कार्य दूसरे दिन के लिये स्थगित कर दिया।

दूसरे दिन सुबह रमेश बहुत जल्दी उठ बैठा। रस्सी और जंगल की लकड़ियों की सहायता से उसने एक मामूली-सी सीढ़ी तैयार कर ली। फिर लौटकर उसने जंगू से कहा, "देखो जंगू, अब तुम्हारे सामने दो रास्ते खुले हैं। या तो तुम हिम्मत कर हमारे साथ गुफा में आगे बढ़ो, या चाहो तो हमारे वापस आने तक यहीं रुको। हम लोग शाम को वापस लौट आयेंगे। गुफा के मार्ग का पूरा पता लगाकर हम वापस लौट पड़ेंगे। यदि दुर्भाग्यवश मार्ग में कोई दुर्घटना हो जाये तब तो कुछ नहीं कह सकते। ऐसा होने पर भी तुम कम से कम तीन दिन तक ठहरना और हमारी राह देखना। उसके बाद तुम वापस लौट सकते हो।"

जंगू को ये बातें बहुत बुरी लगीं। उसने कहा, "तुम लोग घबराओ मत, इस बार मैं यहीं रहूंगा। पर वापस लौटने की न कहो, लौटूंगा तो तुम लोगों के साथ, नहीं तो यहीं इस भूत से लड़ता रहूंगा।"

रमेश को उसका यह भोला-भाला भाव देखकर बड़ी खुशी हुई। वह गुफा में जाने की तैयारी करने लगा। कुछ कीलें, आवश्यक सामान, पिस्तौल, नई बैटरी वाली टॉर्च, मजबूत रस्सी आदि वस्तुएं उसने अपने साथ ले लीं।

सीढ़ी लगाकर पहले रमेश ऊपर चढ़ गया। वहां उस छिद्र में से घुसने पर उसे मालूम हुआ कि उसके साथ एक सुरंग ऊपर की ओर चढ़ती हुई चली गई थी। बहुत दूर कुछ उजाला भी मालूम हुआ जो शायद उस सुरंग

के दूसरे छोर से आ रहा था। अब रमेश ने वसन्त को भी ऊपर बुला लिया। दोनों टॉर्च के सहारे आगे बढ़ते गये। रास्ते में जमीन पर रोड़े बिछे हुये थे जो कभी बहने वाली नदी के अवशेष मात्र जान पड़ते थे।

कुछ दूर जाने पर उनका रास्ता रुक गया। सामने दीवार थी। उन्हें करीब बारह फुट ऊंचे चढ़ना था। जहां से सुरंग फिर शुरू होती थी। यहां पर चढ़ने के लिये उन्होंने लकड़ियों और रस्सी से बनी सीढ़ी से काम लिया। ऊपर चढ़ने पर उन्हें करीब 500 मीटर की दूरी पर साफ-साफ प्रकाश दिखाई दिया। इसी को लक्ष्य करके वे उस ओर चल पड़े।

अब रमेश ने वसन्त से कहा, "देखो वसन्त, सावधानी से आगे बढ़ना। पिताजी ने लिखा है कि इस गुफा के बीच में एक गड्ढा-सा है। असावधान होने पर यह गड्ढा धोखा देता है।" दोनों टॉर्च जलाकर बड़ी सावधानी से आगे बढ़ने लगे। यहां पर उन्हें गुफा में ऊपर और नीचे कुछ बड़े ही चमकदार पत्थर दिखाई दिये। वसन्त एक पत्थर उठाकर उसका निरीक्षण करने लगा। वह बहुत ही भारी था। साथ ही वह कहीं-कहीं से चमकता भी था। रमेश का कहना था कि इस गुफा के दूसरी ओर अपार सोने के होने की यह निशानी है। वे फिर से आगे बढ़ने लगे।

सहसा धूं-धूं की बड़ी जोर की आवाज आने लगी। वे ठिठक कर रुक गये। चार-पांच मिनट बाद आवाज बंद हो गई। हिम्मत करके वे फिर आगे बढ़े। करीब पचास मीटर आगे जाने पर उन्हें वही गड्ढा दिखाई दिया जिसका जिक्र रमेश के पिता ने पत्र में किया था। वही आगे का मार्ग रोके हुए था। गड्ढे की गहराई का कुछ अंदाजा नहीं हो पा रहा था।

तभी रमेश ने एक पत्थर उठाकर उसमें फेंका, कुछ सैकंड पश्चात् बहुत नीचे से धम्म की आवाज सुनाई दी। रमेश ने कहा, "इस पुरानी नदी ने शायद यहीं से मार्ग बदला हो वसन्त, इस गड्ढे को कैसे पार किया जाये? तुम पन्द्रह फुट लम्बी छलांग लगा ही लेते हो पर यह नौ फुट चौड़ा अंतर कूद कर पार करने की हिम्मत शायद तुम न जुटा सको?"

वसन्त को भी अपनी असहाय स्थिति पर दुख होने लगा। थोड़ी देर

बाद रमेश ने कहा, "मुझे तो केवल एक ही उपाय दिखता है। हम लोग अब वही करेंगे।" इतना कहकर उसने बहुत ही संभल कर सुरंग की छत में गड्ढे के पास दो बड़ी-बड़ी कीलें ठोंकी। फिर एक रस्सी बांधी। रस्सी को खींच कर उसकी मजबूती को जांचा। उसने वसन्त से कहा, "पहले तुम आगे बढ़ो।" ऐसा कह उसने उसकी कमर में एक रस्सी और बांध दी।

रमेश बोला, "इस छत की रस्सी को पकड़कर जितने लंबे पेंडूलम के समान झूल सकते हो झूलो और पार जाने की कोशिश करो। इस दूसरी रस्सी को मैं ढील देकर पकड़े रहूंगा, जिससे यदि तुम दुर्भाग्यवश गड्ढे में गिर पड़े तो मैं तुम्हें बाहर निकाल लूंगा। तुम्हारे बाद मैं भी इसी प्रकार उस पार आऊंगा।"

वसन्त साहसी था। उसने रस्सी को एक झटका देकर देखा और फिर झूल गया। दो तीन झूले लेकर वह दूसरी ओर कूद गया। कूदा तो ठीक ही था पर अपने को संभाल न सका। और गड्ढे की दूसरी ओर गिर पड़ा। गिरने से वह इतना नहीं घबराया जितना कि एक दूसरी चीज से। वह 'धूं-धूं' की आवाज फिर होने लगी। डर की बात तो यह थी कि दोनों साथी अलग थे और उनके बीच में एक खाई थी। पहले तो रमेश भी डर गया लेकिन दूसरे ही क्षण उसके समान विज्ञान के बुद्धिमान छात्र को उस विचित्र आवाज के कारण का पता चलने में देर न लगी।

उसने चिल्ला कर कहा, "वसन्त, डरो नहीं, यह किसी मनुष्य या जानवर की आवाज नहीं है। मेरा अनुमान है कि यह गड्ढा नीचे किसी ओर अवश्य खुला होगा। और जब कभी जोर से बहने वाली हवा इसमें से ऊपर आने लगती है तभी यह आवाज शुरू हो जाती है। बस, यही कारण है। समझ लो यह प्रकृति की बनाई हुई बहुत बड़ी सीटी है। और जिसको प्रकृति का वायु प्रवाह ही बजा सकता है।"

उस आवाज का यह कारण वसन्त को भी ठीक लगा। अब उसकी घबराहट बिलकुल दूर हो गई। रमेश ने अपनी कमर से दूसरी रस्सी बांधी और उसे वसन्त की ओर फेंक दिया। छत की रस्सी पकड़कर वह भी बिना

किसी परेशानी के उस पार पहुंच गया। गुफा की छत की रस्सी को उन्होंने दूसरी ओर से बांध दिया। अब सुरंग का दूसरा छोर साफ-साफ दिखाई देने लगा। वे उसे लक्ष्य कर आगे चल पड़े।

पिता पुत्र मिलन

आखिर आधे घंटे बाद दोनों मित्र गुफा के दूसरे द्वार से बाहर निकल आये। उन्होंने देखा कि वे एक बड़े गड्ढे में पहुंच गये हैं। आसपास चट्टानें निकली हुई थीं। ऊपर स्वच्छ आकाश दिखाई दे रहा था। रमेश वहां पहुंचकर बहुत खुश हुआ। उसने वसन्त से कहा, "वसन्त, ईश्वर को धन्यवाद दो जिसकी कृपा से हम लोग यहां तक पहुंच सके हैं। अब मैं सिर्फ एक बात और चाहता हूं, यदि पिताजी का पता चल जाये तो बहुत अच्छा होगा।"

अब ये दोनों उस गड्ढे से ऊपर आने के प्रयत्न में लग गये। शीघ्र ही रस्सी के सहारे वे ऊपर आ पहुंचे। आसपास का दृश्य देखकर वे बहुत खुश हुए। चारों ओर पहाड़ियां और घने वन थे। किन्तु वे जिस पत्थर को उठाते , वही स्वर्णयुक्त और भारी होता था। रमेश ने अनुमान किया कि हो न हो, इस स्थान में कहीं न कहीं शुद्ध सोना अवश्य मिलता होगा।

तभी दूसरी ओर अचानक उन्हें दूर के पहाड़ के पास कुछ हिलता हुआ-सा महसूस हुआ। ध्यानपूर्वक देखने पर उन्हें मालूम हुआ कि वहां कुछ आदमी घूम रहे हैं। रमेश ने अपनी दूरबीन से देखा तो उसे विचित्र दृश्य दिखा। करीब छः-सात व्यक्ति बड़ी ही विचित्र पोशाक पहने कंधे पर पीली चमकदार तलवारों की तरह कुछ शस्त्र लिये घूम रहे थे। वे श्वेत वर्ण के थे। उनका मुख चौड़ा था। और उनके गालों की हड्डियां उठी हुई थीं। वे बड़े-बड़े बालों वाले चमड़े के वस्त्र पहने हुये थे। सिर पर भी विचित्र प्रकार की टोपी थी। कुछ लोगों के पास तीर कमान भी थे। अभी

इन लोगों ने वसन्त और रमेश को नहीं देखा था।

रमेश ने कहा, "देखो वसन्त, इन लोगों से बातचीत करनी चाहिये। इन्हीं से पिताजी के विषय में कुछ पता लग सकता है। जहां तक हो पिस्तौल न चलाना।" वसन्त और रमेश उनकी ओर बढ़ चले। करीब चार सौ मीटर चलकर उन्होंने चिल्ला कर उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

उन लोगों ने आगे बढ़ना बंद कर दिया। और वे अपने-अपने शस्त्र संभालकर इन दो युवकों के पास आने की प्रतीक्षा करने लगे। रमेश ने पास आकर कहा, "हम लोग मित्र हैं।" इन लोगों की समझ में कुछ न आया। और उनमें से एक तो हाथ ऊपर कर मालूम नहीं क्या कह गया। मालूम होता था वे उन्हें डराना चाहते थे। रमेश ने अब इशारे से बात करना शुरू किया। लेकिन सब व्यर्थ गया।

इसी बीच उन दो व्यक्तियों की ओर वसन्त और रमेश का ध्यान नहीं गया जो उनकी आंखें बचाकर चुपचाप खिसक गये थे। वे पीछे से आकर एकदम रमेश और वसन्त पर झपट पड़े। बेचारे बालक घबरा गये। यह आक्रमण अनपेक्षित था। वे किसी प्रकार उनका विरोध न कर सके। इतनी ही गनीमत थी कि उन्होंने अपने शस्त्रों का उपयोग न किया था, केवल उनके हाथ पैर बांध दिये थे। वे असहाय हो गये। रमेश अपनी असावधानी पर बहुत पछता रहा था। सारा बना-बनाया खेल बिगड़ गया। इतनी तकलीफें सहीं, क्या इसी तरह इन जंगलियों के हाथों से मरने के लिये।

जंगली इन दोनों को उठाकर एक ओर चल दिये। थोड़ी दूर जाने पर दूर से एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया। उसकी लंबी और शुभ्र दाढ़ी थी। हाथ में उसी पीली धातु का एक चिमटा था। उसे देखते ही वे जंगली खड़े हो गये। और उस आदमी के बोलते ही सबके सब जमीन पर लेट गये। उसने कुछ शब्द बुदबुदाये और वे सब घुटने टेककर खड़े हो गये।

रमेश और वसन्त को भी उसके सामने लिटा दिया गया। उस व्यक्ति के कहने पर उनके हाथ पैर खोल दिये गये। वह व्यक्ति जाने लगा तो सब लोग उस व्यक्ति के पीछे-पीछे चल दिये। जिस गड्ढे से वसन्त और रमेश निकले थे उस गड्ढे के पास की एक पहाड़ी पर ये लोग पहुंच गये। वहां एक गुफा थी। रमेश और वसन्त को उसी व्यक्ति के पास छोड़कर वे जंगली उस व्यक्ति को फिर दण्डवत प्रणाम कर एक ओर चले गये।

बहुत देर बाद उस पुरुष ने वसन्त और रमेश को सम्बोधित करते हुए कहा, "हे बालकों, तुम लोग कौन हो? और यहां किस लिये आये हो?" भाषा हिन्दी ही थी। लेकिन कुछ विचित्र-सी थी। उस मनुष्य के मुख से अपनी ही भाषा सुनकर रमेश पहले तो चकराया पर दूसरे ही क्षण उसकी आंखें किसी अज्ञात कल्प[illegible] से चमक उठीं।

उसने आदि से अन्त तक सब हाल कह सुनाया। आंखें मूंदकर वह व्यक्ति सब बातें बड़े ध्यान से सुनता रहा। बीच-बीच में वह बहुत ही उत्सुक हो उठता था। रमेश की कहानी समाप्त होते ही उसकी आंखों से आंसू बह चले। वह गद्गद् हो गया।

उसने दौड़कर रमेश को गले से लगाया और "बेटा रमेश," कहकर सिसकने लगा। पिता पुत्र का हृदयस्पर्शी मिलन देखकर वसन्त की आंखों से भी आनन्द के आंसू बहने लगे।

पानी में आग

इस मिलन के कुछ देर बाद जब उनके व्यथित हृदयों को शान्ति मिली तब रमेश ने कहा, "आज आपसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जब से आपका पत्र पढ़ा है तभी से यही एक धुन सवार थी कि किसी तरह से आपको ढूंढ़ लूं। आपको देखकर माताजी कितनी प्रसन्न होंगी। अब अपना हाल तो बताइये। ये लोग आपका यहां पर इतना आदर क्यों करते हैं?"

रमेश के पिता ने उत्तर दिया, ''हां बेटा, सुनो मैं तुम्हें सब बताता हूं। पहले-पहले जब मैंने इस स्थान का पता लगाया था तब इन जंगलियों से मेरी मुलाकात न हुई थी। मैं केवल पास की पहाड़ी का सोना बीनकर लौट आता था। उस खून के बाद मैं यहां आकर छिपा तो मुझे इन जंगलियों का पता चला। वह जाति सामने की नदी के उस पार रहती है। इन लोगों ने मुझे पकड़ लिया। कुछ दिन कैद में भी रखा। पर उन्होंने मुझे किसी प्रकार का कष्ट नहीं दिया। मैं भी धीरे-धीरे उनकी भाषा सीख गया। करीब एक वर्ष बाद मुझे सीधा-साधा जानकर स्वतंत्रता दे दी गई।

''फिर एक ऐसी मजेदार घटना हुई जिससे ये लोग मुझे फिर से कैद न कर सके। मैं इस गुफा के द्वार से बाहर निकल जाता और दिनभर गायब रहता। इन लोगों को पता न चलता कि मैं कहां जाता हूं। इन्होंने जानने की कोशिश की, परन्तु मैंने कुछ पता नहीं लगने दिया।

''एक दिन की बात है कि मुझे जंगलों में घूमते-घूमते एक शिकारी का सामान मिल गया। उसमें एक स्प्रिट की बोतल भी थी। मैं उसे उठा लाया और मैंने इन जंगलियों को एक चमत्कार दिखाने की सोची। एक दिन मैं उनसे किसी बहाने झगड़ पड़ा और बोला, ''तुम लोग मुझे समझते क्या हो? मैं अर्न्तध्यान हो सकता हूं। तभी तो तुम लोग मुझे ढूंढ़ नहीं पाते। मैं क्या नहीं कर सकता? मैं पानी में आग लगा सकता हूं। तुम्हारी इस जीवन दायिनी नदी को जला सकता हूं। कल तुम लोग सब मेरा चमत्कार देखना। मैं अपना चमत्कार दिखाऊंगा।

''दूसरे दिन प्रातः जंगलियों का एक झुण्ड नदी के किनारे आ खड़ा हुआ। मैं अपने कटोरे में स्प्रिट रखे खड़ा था। मैंने मंत्र पढ़ा। थोड़ी-सी आग जलाई और कटोरे के बनावटी पानी में आग लग गई। वह जलने लगा और जंगली चकित हो गये। वे घबरा गये। एक दूसरे से कानाफूसी करने लगे। मैंने उन्हें और अधिक डराने के लिये थोड़ी-सी स्प्रिट भूमि पर डाल दी। और उसमें आग लगा दी। एक जलती हुई नदी बह चली।

''मैंने कहा देख लो, इसी प्रकार मैं तुम्हारी नदी में भी आग लगा

सकता हूं। इसका प्रभाव जंगलियों पर बहुत अधिक पड़ा। वे मेरे सामने गिड़गिड़ाने लगे। मैंने भी कहा मैं तुम लोगों को जरा भी सताना नहीं चाहता। मुझे आराम से रहने दो। जब जाना चाहूंगा तब चला जाऊंगा। तुम लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ूंगा। तुम लोगों का भला ही करूंगा। मैं भविष्यवाणी करता हूं कि आज से दस वर्ष बाद मेरे ही समान इस देश में और कोई आयेगा, वही मेरे जाने का समय होगा।

''मेरा संकेत रमेश, तुमसे था जिसकी मुझे आशा कम ही थी। पर भविष्यवाणी करने में कोई हानि न थी। बस तब से मैं सुख से रह रहा हूं। अब तो मैं यहां का बहुत बड़ा महापुरुष समझा जाता हूं।''

इतने में कुछ जंगली लौट आये। वे लोग उस स्थान में यहां-वहां घूमने लगे। ध्यान से देखने पर रमेश को मालूम हुआ कि उनकी तलवारें शुद्ध सोने की हैं। रमेश के पिता के कथनानुसार पास ही एक छोटी पहाड़ी थी जहां पर शुद्ध सोने का ढेर लगा हुआ था। रमेश को वहां एक और विचित्र बात दिखाई दी। जिस गड्ढे से वे निकले थे उसके पश्चिम की ओर, कुछ दूर एक नदी थी। उसकी विचित्रता यह थी कि वह उत्तर की ओर बहुत धीमी गति से बहती थी। उसके किनारे और नदियों की तरह थे किन्तु पास की जमीन से कुछ ऊंचे थे अर्थात नदी के पानी की सतह जमीन से अधिक ऊंची थी। रमेश ने वसन्त से कहा, ''जब इस नदी का पालवाला किनारा टूटेगा तो ढाल को देख कर साफ पता चलता है कि नदी गुफा के गड्ढे में गिरेगी।''

फिर रमेश और वसन्त रमेश के पिता के साथ उस गुफा की ओर गये जहां सोने का ढेर लगा हुआ था। वहां का दृश्य देखकर रमेश की आंखें चकाचौंध हो गईं। सोने के ढेले यहां-वहां पड़े थे। रमेश और वसन्त ने कुछ बड़े-बड़े ढेले उठा लिये और शाम होने से पहले ही वहां से वापस आ गये। पिता की गुफा में आकर वे लोग आराम करने लगे।

सहसा रमेश को जंगू की याद आई। न मालूम जंगू क्या सोच रहा होगा। उसके लिये जल्दी ही लौटना पड़ेगा। उसने पिताजी से कहा,

"पिताजी, जंगू के लिये हम लोगों को लौटना ही पड़ेगा।"

पिताजी ने कहा, "ठहरो, कल हम तीनों ही चलेंगे। मैं भी बाहर जाने को उत्सुक हूं। करीब आठ वर्ष से मैंने गुफा का उपयोग नहीं किया। तुम लोग यहां आराम करो, मैं गुफा के गड्ढे पर रात भर में पुल-सा बना लेता हूं जिससे उसे पार करने में तुम्हें रस्सी से न झूलना पड़े।"

रमेश और वसन्त सोने की तैयारी करने लगे और 'मिहतो जी' बाहर निकल आये। रमेश के पिता को जंगली लोग 'मिहतो' ही कहते थे। जिसका अर्थ उनकी भाषा में 'महात्मा' होता है।

करीब आधी रात गये रमेश की नींद खुली। तब उसे मालूम हुआ कि हवा बहुत जोरों से बह रही है और वर्षा भी हो रही है। रमेश ने द्वार पर आकर देखा कि मूसलाधार वृष्टि हो रही है। सहसा उसे किसी अज्ञात भय ने डरा दिया। वह उत्सुक होकर अपने पिता की बाट जोहने लगा। पौ फटने का समय आ गया पर वृष्टि में जरा भी कमी न आई। वसन्त और रमेश चिन्तातुर अवस्था में गुफा के द्वार पर बैठ गये।

कांचन गुफा का अंत

थोड़ी देर बाद मिहतो जी आ पहुंचे। वह बहुत घबराये हुये से थे। उन्होंने कहा, "रमेश जल्दी तैयारी कर लो। अपनी टॉर्च भी संभाल लो। हमें बहुत बड़े संकट का सामना करना है। एक ऐसी घटना घट गई है जिससे कि हमारी जान खतरे में है। तुम्हारी पिस्तौल उन जंगलियों के हाथ लग गई है। ये लोग बहुत बेवकूफ निकले। मुझे बिना बताये पिस्तौल अपने राजा के पास ले गये। राजा भी बेवकूफ था। पिस्तौल को देखते-देखते उस मूर्ख ने घोड़ा दबा दिया और राजा साहब ने सीधे स्वर्ग का मार्ग लिया। जंगलियों की समझ में कुछ न आया। पत्थर मारकर उन्होंने उस पिस्तौल को चकनाचूर कर दिया। बीच-बीच में गोली छूटने

की आवाज हुई जिसने उन्हें और भी डरा दिया। वे अपने राजा की मृत्यु का कारण तुम्हीं लोगों को समझते हैं क्योंकि तुम्हीं पिस्तौल लेकर आये हो। वे तुम्हारे खून के प्यासे हो रहे हैं और तुम्हें पकड़ना चाहते हैं। उनका अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित एक बड़ा भारी झुंड इसी गुफा की ओर चला आ रहा है। अब तुम्हें बचाना मेरी शक्ति के बाहर है।

"यह सब कुछ मुझे अपने एक विश्वस्त जंगली नौकर से मालूम हुआ है। ये सब बातें उसने अपनी आंखों से देखी हैं। मैंने किसी समय उसे एक बड़े संकट से बचाया था इसलिए वह मुझे यह सब बताने चला आया। इन जंगलियों का झुंड अब यहां से ज्यादा दूर नहीं है।"

अब रमेश और वसन्त को अपनी पिस्तौलों की याद आई। वे अभी तक उन्हें एकदम भूले हुये थे। उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उसके कारण इतना बड़ा अनर्थ हो जायेगा। अब वे तीनों उस मूसलाधार बारिश में ही उस गड्ढे की ओर चल पड़े जिसमें से होकर उनकी बाहर जाने की सुरंग थी। इतना होते हुये भी रमेश और वसन्त ने सोने के ढेले हाथ में ले लिये। गड्ढे के पास पहुंचकर वे तीनों उसमें उतर पड़े।

इतने में कुछ दूरी पर जंगलियों का झुंड दिखाई दिया। उन्होंने इन तीनों को भागते हुए देख लिया और बड़ा भीषण चीत्कार किया। रमेश और वसन्त के हृदय एकबारगी तो कांप ही उठे। गड्ढे में कुछ पानी एकत्र हो गया था, और वह गुफा के रास्ते बह चला था। अपनी टॉर्च जलाये छप-छप करते हुए ये दोनों बालक आगे बढ़े। पानी के कारण आगे बढ़ने में बड़ी कठिनाई हो रही थी। और फूंक-फूंक कर कदम रखने पड़ रहे थे।

करीब बीस मिनट में वे उस बीच के गड्ढे के समीप पहुंच गये। सौभाग्य की बात थी कि रात को मिहतो जी एक बड़ा डंडा आर पार रख आये थे। रमेश की रस्सी अभी तक उसी स्थान पर थी। उसी का सहारा लेकर वे तीनों पुल पार कर गये। रमेश और मिहतो जी ने बहुत चाहा कि वसन्त अपने ढेलों को वहीं छोड़ दे, पर न मालूम वसन्त को किस लालच ने आ घेरा था।

इतने में जंगली उनके पास आ गये। मिहतो जी एकदम चिल्ला उठे, "डंडे को अपनी ओर खींचकर गड्ढे में छोड़ दो और रस्सी को काट दो।" दूसरे ही क्षण डंडा गड्ढे में गायब हो गया। वे तीनों गिरते-पड़ते जैसे हो सका भाग चले। कुछ जंगली गड्ढे के पास आ गये और कुछ दूर से ही हतप्रभ से होकर ताकने लगे थे।

सहसा 'धूं-धूं' की आवाज सुनाई देने लगी। रमेश ने वसन्त से कहा, "देखो, प्रकृति की सीटी बज रही है।" अब ये तीनों कुछ ठिठक गये। जंगलियों का बुरा हाल था। उन्हें आवाज ने बहुत डरा दिया था। वे आगे नहीं आ सकते थे इसलिये पीछे भागने लगे।

सहसा 'धड़-धड़' की आवाज होने लगी। रमेश और वसन्त कुछ न समझ सके कि क्या बात है। मिहतो जी की समझ में भी कुछ न आया। रमेश ने देखा कि जंगलियों के पीछे दूसरे द्वार से आता हुआ प्रकाश सहसा बन्द हो गया है। वह भर्राई हुई आवाज तेज हो गई थी। जंगली बड़े ही करुण स्वर में चीत्कार करने लगे।

साफ-साफ मालूम हो रहा था कि वे मृत्यु मुख में जा रहे हैं। देखते ही देखते वे सब गायब हो गये और रुके हुए पानी की एक तेज धारा जो पूरी गुफा में समाई हुई थी, तीव्र वेग से आगे बढ़ चली। सब जंगली उसमें डूब गये।

रमेश और वसन्त डर के मारे उसी धारा में बह जाने की प्रतीक्षा करने लगे। पर सहसा वह उस बीच के गड्ढे में गिरने लगी। 'धों-धों' की आवाज आने लगी। जंगलियों का नामोनिशान न रहा। कुंछ पानी इनकी ओर बहकर आता अवश्य था किन्तु वह फिर गड्ढे में समा जाता था। वहां एक छोटा-सा जल प्रपात बन गया था। इस बीच रमेश कुछ संभल गया और बोला, "पिताजी मेरा कहना ठीक निकला, हो न हो वही नदी किनारा तोड़कर गड्ढे में आ गयी है। अब इस कांचन गुफा का मार्ग सदा के लिये बंद हो गया है।"

"वसन्त तुमने ठीक ही किया जो थोड़ा-सा सोना ले आये। चलो हम

लोग भाग चलें। नहीं तो न मालूम क्या हो?"

करीब आधे घंटे बाद गिरते-पड़ते ये लोग गुफा के दूसरे द्वार पर आ ही पहुंचे। नीचे उतरने से पहले रमेश ने जंगू को बड़े जोर से पुकारा। बेचारा बालक गुफा के भीतर ही खड़ा था। उन्हें देख कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई।

जंगू ने चिल्लाकर कहा, "रमेश नीचे चले आओ। डरने की कोई जरूरत नहीं। पानी के भय से भूत भाग गया है। संभल कर आना।" रमेश समझ गया कि अधिकांश दूषित वायु नीचे जमे हुये पानी में घुल गई है।

ये तीनों नीचे उतर आये।

पश्चिम के जंगली

दोपहर को इन सबने खूब विश्राम किया और बातें करते हुए समय बिताया। जंगू को भी जंगलियों का हाल सुनकर बड़ा मजा आया। यद्यपि सब बातें उसकी समझ में साफ-साफ नहीं आई थीं। सबने यही सोचा था कि कल प्रातः यहां से रवाना होना होगा। मिहतो जी को एक बात बहुत खटक रही थी। उन्होंने रमेश से कहा, "रमेश, तुमने सेठ को सबक सिखाने में अपनी असाधारण बुद्धिमत्ता का परिचय तो अवश्य दिया है पर न मालूम मेरा मन इतने वर्षों में किस प्रकार बदल गया है। अब बदला लेने के विचारों का मेरे हृदय में स्थान नहीं है। मैं जब यह सोचता हूं कि सेठ और उसके साथी किस प्रकार कष्ट भोग रहे होंगे, तब मुझे असहनीय पीड़ा होती है। मेरी इच्छा है कि उस शिखर के पास पहुंचकर हम लोग सेठ और उसके साथियों को बचाने की कोशिश करें। उन्होंने कुछ भी किया हो, किन्तु उन्हें इतना कड़ा दण्ड देने का हमें अधिकार नहीं है।"

रमेश को भी पिता का कहना मानना पड़ा। अब उसके पिता उसे मिल

गये थे इसलिये उसका क्रोध सेठ पर कम हो गया था। दूसरे दिन जब सब लोग उस मनुष्य आकृति वाले शिखर के पास पहुंचे तो वहां डेरा डाल दिया गया।

रमेश, मिहतो जी और वसन्त आपस में इस बात पर वाद-विवाद करने लगे कि सेठ का पता लगाने दाहिनी ओर के वनों में प्रवेश किया जाये या नहीं। रमेश जल्दी घर लौटना चाहता था। वसन्त स्वयं कोई विचार न रखता था। वह दोनों बातों के लिये तैयार था। रमेश के पिता की इच्छा थी कि हो सके तो सेठ का पता लगाया जाये। लेकिन उन वनों के और उस अज्ञात मार्ग के कष्ट और विपदाओं का ख्याल कर वह विचलित हो जाते थे।

इस कारण तीव्र इच्छा होने पर भी वे दृढ़ निश्चय नहीं कर पा रहे थे। अपने एक मात्र पुत्र को वह फिर से खतरे में नहीं डालना चाहते थे। अन्ततः कुछ निश्चय न हो सका। उस दिन पूर्णिमा की रात्रि थी और उन्होंने सोचा कि यह रात यहीं बिताई जाये।

संध्या का आगमन हुआ। सब लोग भोजन आदि से निवृत होकर आग तापते हुए डेरे के बाहर बैठे थे। सामने पूर्णिमा का चन्द्रमा मुस्करा रहा था। आकाश साफ और नीला था। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। आग के पास ज्यादा ठंड महसूस नहीं हो रही थी। यह कहना अधिक उचित होगा कि आग के ताप से ठंड बहुत सुखद प्रतीत हो रही थी।

सहसा मिहतो जी बात करते-करते रुक गये। वह उठ खड़े हुये और कुछ बेचैन से होकर यहां-वहां घूमने लगे। वह बहुत ही चिन्तातुर दिखाई दे रहे थे। सहसा वह बोल पड़े, "ओफ्फो, मैं तो एकदम भूल ही गया था और अब न मालूम क्या होगा? ईश्वर ही हमें बचाये।" रमेश, वसन्त और जंगू बड़े हैरान थे।

"आखिर बात क्या है, पिताजी," रमेश ने पूछा

"सुनो , आज वैशाखी पूर्णिमा है और आज के दिन इस पूर्व भाग के खूंखार जंगलियों का एक समूह इन भागों में अवश्य आता है। और उत्तर

भाग में भी वैसी ही किसी जाति का एक समूह है। फिर इन दोनों के बीच यहां इस शिखर के नीचे चांदनी रात में युद्ध होता है। दोनों दलों में बराबर-बराबर व्यक्ति होते हैं। और इस युद्ध में जो विजयी होता है वह दूसरे दल के बचे हुये जीवित व्यक्तियों को अपने प्रदेश में ले जाता है और फिर पता नहीं उनका क्या होता है।

"कोई कहता है उनकी बलि चढ़ाई जाती है। सत्य बात ईश्वर ही जानता है। आज हमारा डेरा यहां है। यदि वे हमारा डेरा देख लेंगे तो हमारी जान आफत में आ जायेगी।"

यह समाचार सुन सब बड़े असमंजस में पड़ गये। डेरा जमाकर अब वहां रहना असम्भव ही था। और फिर उस रात के समय अन्य किसी स्थान की खोज करना या आगे यात्रा करना भी असम्भव था। यद्यपि वसन्त और रमेश की पिस्तौलें कांचन गुफा के जंगलियों के हाथ लग गई थीं तब भी सेठ के साथियों की दो अच्छी ऑटोमैटिक पिस्तौलें उनके हाथ पहले ही लग चुकी थीं। वे अभी तक इनके पास थीं और इन पर उन्हें भरोसा था। लेकिन एक बड़े दल के सामने इनका उपयोग हो सकता था क्या?

फिर भी रमेश और वसन्त ने पिस्तौलें तैयार कर लीं और यह तय किया गया कि रात भर पहरा दिया जाये। जंगू का कुछ और ही इरादा था। उसने जब यह सुना और समझा तो उसने एक और उपाय इस दल के समक्ष रखा। उसका कहना था कि वह पूर्व रास्ते की ओर जाकर विचित्र आवाज करेगा, ऐसे स्वर निकालेगा जिससे कि जंगलियों की वहां आने ही हिम्मत ही न पड़े।

रमेश और वसन्त जंगू को अकेला जाने देने के लिये तैयार न थे। पर जंगू को अपने पर पूरा-पूरा विश्वास था। आखिर यह निश्चय किया गया कि वसन्त जिसका निशाना अचूक था, जंगू के साथ जाये जिससे मौका पड़ने पर वह काम आ सके। लेकिन मिहतो जी ने वसन्त को सावधान कर दिया था कि वह अति आवश्यकता होने पर ही पिस्तौल चलाये।

डेरे के पास ही एक ऊंचा वृक्ष था। पर उसकी चोटी पर पहुंचकर उतर आना जंगू के लिये मिनटों का खेल था। मध्य रात्रि के होने में करीब एक डेढ़ घंटे का समय शेष था। सब लोग सतर्क होकर बैठे हुये थे।

सहसा बहुत दूर से ढोलों की अस्पष्ट ध्वनि सुनाई देने लगी। जंगू दौड़कर पास के वृक्ष पर चढ़ गया। वह ध्वनि धीरे-धीरे पास आती प्रतीत हो रही थी। करीब पन्द्रह मिनट बाद जंगू नीचे आया। उसके साथी चिन्तातुर होकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जंगू ने बताया, "पश्चिम से मशालें लिये हुए कुछ व्यक्ति चले आ रहे हैं और यह पश्चिम का ही दल है। पूर्व में अभी किसी का नामोनिशान नहीं है। पहले मैं इन्हीं को डराकर भगाने की युक्ति करता हूं। चलो वसन्त।"

वसन्त और जंगू पश्चिम की ओर चल पड़े। करीब दस-पंद्रह मिनट चलकर वे फिर एक ऊंचे वृक्ष के पास आये। दोनों उस पर चढ़ गये। जंगू तो बहुत ही ऊपर चढ़ गया और वसन्त कुछ नीचे ही एक डाल पर बैठ गया। जंगू ने कहा, "दल अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है।"

बाजों की आवाज़ प्रतिक्षण बढ़ती जा रही थी। बीच-बीच में वे सब एक विचित्र स्वर में चिल्ला उठते थे। जंगू ने चिल्ला कर वसन्त से कहा, "वसन्त अच्छी तरह बैठे रहना, डरना नहीं।"

और फिर उसी वृक्ष से एक बहुत डरावनी आवाज आनी आरम्भ हो गई। यदि वसन्त को यह मालूम न होता कि यह जंगू का कौशल है तो वह भी भयभीत हो जाता। आवाज वैसे ही डर और भय पैदा करने वाली थी। और हर क्षण तीव्र होती जा रही थी। बीच-बीच में बदल भी जाती थी। जंगू और वसन्त दोनों उस दल की ओर देख रहे थे।

थोड़ी ही देर बाद सहसा ढोलों का बजना बन्द हो गया। जंगली अपने मार्ग में ठिठक गये। मशालें यहां-वहां घूमने लगीं। ढोलों के बन्द होते ही वह शैतानी आवाज और भी डरावनी मालूम होने लगी। रात के समय और आसपास के घने वनों ने उस आवाज को और भयानक बना दिया था।

स्पष्ट था कि दल डर गया है। फिर सबने मिलकर जोर की हुंकार की, मशालें ऊपर हुईं। जवाब में वृक्ष की आवाज ने ऐसा पैंतरा बदला कि भूत-प्रेत और पिशाच सबके स्वर उसमें मिश्रित थे। अब आवाज दूसरे वृक्ष से आने लगी और जंगलियों की ओर बढ़ने लगी। इसका प्रभाव यह हुआ कि जंगली बेतहाशा पीछे भाग खड़े हुए। ढोलवालों ने अपने ढोल छोड़ दिये। उस पैशाचिक आवाज ने उन जंगलियों का कुछ दूर तक पीछा किया।

फिर थोड़ी देर में धीरे-धीरे वह आवाज बंद हो गई। जब जंगू और वसन्त लौटकर डेरे पर आये तो उन्होंने जंगलियों को भगाने का हाल कह सुनाया। इस बीच रमेश और वसन्त को एक बात बहुत खटक रही थी। दोनों से यह छिपा न रहा कि बोलते-बोलते मिहतो जी उदास हो जाते थे। वे उसका कारण जानना चाहते थे। आखिर रमेश ने पूछ ही लिया, "पिताजी, मैं एक बात कहे बिना नहीं रह सकता कारण कुछ भी हो पर जब से आप ने कांचन गुफा छोड़ी है तब से मैं महसूस कर रहा हूं कि आप कुछ कहते-कहते बीच ही में उदास हो जाते हैं, मैं ठीक कह रहा हूं न?"

मिहतो जी की मुद्रा एकदम गंभीर हो गई। वह थोड़ी देर चुप रहे फिर बोले, "हां, रमेश, जब से मैंने कुछ जंगलियों को पानी के तीव्र प्रवाह के साथ गड्ढे में गिरते देखा है तभी से मैं अस्वस्थ हूं।"

"यह अस्वस्थ होने की बात नहीं है, वे हमारा पीछा कर रहे थे और हमें पकड़ना चाहते थे, यदि वे प्रवाह के साथ न बहते तो शायद..." रमेश ने कहा।

"नहीं हमने गड्ढे के आर पार पुल बनाने वाला डंडा खींचकर उसे गड्ढे में डाल दिया था और इस कारण उनका हम तक पहुंचना प्रायः असंभव था। बेचारे बेमौत मरे।" मिहतो जी के स्वर में दुख प्रकट हो रहा था। अब वसन्त से न रहा गया वह बोल उठा, "उनके मरने का कारण तो प्राकृतिक विपदा थी, गड्ढे के ऊपर की नदी बांध तोड़कर गड्ढे में गिर गई थी और अभागे जंगलियों को अपने साथ ले गई। उसमें हमारा कोई

दोष न था। प्रकृति अपनी इस प्रकार की विनाश लीला न मालूम कितनी ही बार दोहराती होगी।''

''तुम्हारा कहना ठीक है लेकिन असहाय जंगलियों का वह चीत्कार अभी भी मेरा दिल दहला देता है।''

''न मालूम कितने ही जीव संसार में होने वाले भूकम्प, बाढ़ और इसी प्रकार की घटनाओं में नष्ट हो जाते होंगे, हम किस-किस के लिये दुखी होते रहेंगे, पिताजी?'' रमेश ने कहा।

''ठीक कह रहे हो रमेश, पर मुझे रह-रहकर यह बात खटक रही है, कि यदि तुम लोगों की पिस्तौल के कारण जंगलियों के राजा की मौत न होती...''

''किन्तु उसमें हमारा कोई दोष नहीं है, यह तो उन्हीं की नासमझी थी, हम कर ही क्या सकते थे?''

''होनी को कोई टाल नहीं सकता, किन्तु मुझे खुशी बहुत होती यदि हम उन जंगलियों की सहमति और सदिच्छाओं के साथ गुफा छोड़ते। मुझे पूरा विश्वास है कि उस दुर्घटना के अभाव में हम ऐसा कर पाते।''

''कर पाते तो बहुत अच्छा होता इसमें कोई शक नहीं पर अब उसके लिये दुखी होना बेकार है।''

''यह मैं भी समझता हूं। मैं जानता हूं कि ये लोग जंगली अवश्य हैं लेकिन अपने प्रकार से सभ्य भी हैं। शिक्षा के अभाव के कारण ही वे अज्ञानी हैं। मैं घर पहुंच कर कोशिश करूंगा कि कुछ समाज सेवकों के साथ और सरकार की सहायता से मैं हवाई जहाज या अन्य किसी प्रकार से वापस इन लोगों में जाऊं और इनमें शिक्षा का प्रसार करूं।''

सहसा जंगू ने हाथ ऊपर कर सबको चुप रहने का इशारा किया। उसके तेज कानों को पूर्व से आनेवाली ढोलों की आवाज सुनाई दे रही थीं। ''देखो, अब ये दूसरा पूर्व का दल आ रहा है। चलो वसन्त थोड़ा काम और कर लें।''

''नहीं वसन्त इस बार मैं जाता हूं।'' रमेश ने कहा। ''पिताजी के

कथनानुसार पूर्व के इन जंगलियों का दल अधिक खूंखार होता है।''

वसन्त ने कहा, ''रहने भी दो, मैं यह चला,'' और रमेश के देखते ही देखते दोनों गायब हो गये।

वसन्त लापता

जंगू और वसन्त पूर्व के रास्ते की ओर बढ़ते गये। ढोलों की आवाज तीव्र होती जा रही थी। इस दल के पास ढोल के अतिरिक्त अन्य बाजे भी थे। भोंपू की आवाज भी बीच-बीच में तीव्रता से सुनाई दे जाती थी। थोड़ी दूर जाकर जंगू के कहने पर वसन्त एक वृक्ष पर चढ़कर बैठ गया और जंगू आगे बढ़ गया। अब तक जंगलियों का दल काफी पास आ गया था और वे बहुत चपलता से उछल रहे थे। उनके हाथों में मशालों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के वृक्षों की डालियां भी थीं। उनके साथ एक जंगली कुत्ते के समान पशु भी था, जो बीच-बीच में भौंक उठता था।

सहसा बढ़ते हुये जंगलियों के पीछे से जंगू की विचित्र आवाज आनी प्रारम्भ हो गई। सब जंगली एकदम ठिठक गये। पीछे आवाज होने के कारण सामने भागने लगे। वसन्त कुछ डरा क्योंकि वे उसी के वृक्ष की ओर आ रहे थे। मन ही मन उसे जंगू की मूर्खता पर बड़ा क्रोध आया।

सब जंगली उसी वृक्ष के नीचे आकर रुक गये। वह आवाज कुछ देर के लिये बंद हो गई। जंगली आपस में कानाफूसी कर रहे थे। वसन्त डरा हुआ बैठा था। उसे खतरे का आभास हो रहा था। यदि जंगलियों को मेरे यहां होने का पता लग गया तो? आगे सोचना उसके लिये असहनीय था।

सहसा दूसरी ओर से अर्थात पश्चिम से जंगू की आवाज आने लगी। अब जंगलियों ने अपने जंगली कुत्ते को उस ओर 'शू' किया। भेड़िये के समान दिखने वाला कुत्ता तेजी से भौंकता हुआ उस आवाज की ओर बढ़ा। जंगली यह सब बड़ी आतुरता से देख रहे थे और वसन्त भी।

सहसा वह आवाज बंद हो गई और उस कुत्ते का आर्तनाद सुनाई दिया। फिर धीरे-धीरे सब शांत हो गया। इसी बीच वसन्त धीरे-धीरे उस डाल पर कुछ और ऊपर चढ़ गया जिससे वह ऊपर के घने पत्तों में छिप सके। अचानक उसका हाथ एक कोमल-सी वस्तु पर पड़ा और उसे एक फुफकार-सी सुनाई दी।

दूसरे ही क्षण उसे इस कटु सत्य का अनुभव हो गया कि उसका हाथ एक सांप के समान वस्तु पर पड़ा है। बिजली की सी गति से उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया लेकिन संभलते-संभलते भी वह उन जंगलियों के बीच आ गिरा।

वसन्त को देखकर वे जंगली पहले तो डरे फिर वसन्त के उठने से पहले ही उनका मुखिया उस पर झपट पड़ा । उसके आदेश देते ही और भी लोग उस पर टूट पड़े और सबने उसे कसकर पकड़ लिया लेकिन न मालूम क्यों किसी ने उस पर शस्त्र नहीं चलाया। उसे केवल घूंसे और मुक्के ही पड़े थे किन्तु इतने में ही उसकी हालत खराब हो गई थी। जंगलियों का मुखिया कुछ कहता जा रहा था। उसी के कहने से वसन्त पर शस्त्र नहीं चलाया गया था।

इतने में पीछे से जंगू की आवाज आने लगी। जंगलियों में खलबली मच गई। आवाज तीव्रतर होती गई। यह तो स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा था कि वे डर गये हैं। उनके मुखिया ने कुछ कहा फिर वसन्त के हाथ-पैर बांध दिये गये और एक भीमकाय जंगली वसन्त को अपने कंधे पर डालकर भाग चला। उसके पीछे और भी लोग भाग चले। ढोलवाले रुक गये। वे ढोलक को जमीन पर रखकर उसे जोर-जोर से पीटने लगे। मानों वे उस तीव्र आवाज को डराना चाहते हों। पर कहां? वह और भी तीव्र और भयावनी होती गई।

बस, अब ढोलक बजाने वालों का धैर्य जाता रहा। वे भी अपने साथियों के पीछे भाग चले। जंगू की आवाज उनका पीछा करने लगी। जंगू ने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि वसन्त भागते हुये जंगलियों

के हाथों पड़ गया है। वह उन्हें बहुत दूर खदेड़कर उसी वृक्ष के नीचे आया जिस पर वसन्त बैठा था। उसने हंसते हुये वसन्त को पुकारा पर जब कोई उत्तर न मिला तो वह सहम गया। उसने पेड़ को ध्यान से देखा, फिर दो-चार बार पुकार कर वह तेजी से डेरे की ओर भागा।

रमेश और उसके पिता चिन्तामग्न होकर उनकी राह देख रहे थे। जंगू को अकेले ही जल्दी-जल्दी आते देखकर किसी अज्ञात भय से वे सिहर उठे। जंगू ने आते ही हांफते-हांफते प्रश्न किया, "वसन्त आ गया क्या?"

"नहीं तो"? रमेश ने जवाब दिया, "क्यों क्या बात है?"

"वसन्त नहीं लौटा," इतना कहकर जंगू हक्का-बक्का सा रह गया। अब रमेश के पिता से न रहा गया। वह बोले, "क्या हुआ? जरा साफ-साफ कहो जंगू?" जंगू ने रुकते-रुकते सब हाल कह सुनाया।

"जब वह जंगली कुत्ता मेरी ओर लपका तो मैं बहुत खुश हुआ क्योंकि वह वसन्त की ओर नहीं गया था। मैंने पहले ही कुत्ते को देख लिया था इसीलिये मैं तैयार था। मेरे हाथ में एक वृक्ष की बड़ी-सी डाल थी, और मैं वृक्ष की सबसे नीची डाल पर बैठा था। कुत्ता तेजी से मेरी ओर दौड़ा। मैंने अपना एक पैर जानबूझकर लटका दिया था। उसको लक्ष्य कर कुत्ता झपट पड़ा। मैं तैयार ही था। तेजी से मैंने अपना पैर ऊपर खींचा और हाथ की मोटी डाल पूरी शक्ति से कुत्ते के मुंह में ठूंस दी। कुत्ता चीं-चीं करता हुआ पीछे हटा पर मैंने लपक कर उसे पकड़ लिया और पास की एक मजबूत बेल लेकर उसके चारों पैर और मुंह एक साथ बांध दिये। जंगलियों को यह कुछ दिखाई न दिया और फिर उन्हें भगाकर लौटा तो वसन्त वृक्ष पर नहीं था। मैंने सोचा, शायद इधर आ निकला हो। लेकिन यहां भी वह नहीं आया तो फिर गया कहां?"

अब तीनों चक्कर में पड़ गये फिर टॉर्च और पिस्तौल आदि लेकर वे तीनों उस वृक्ष के पास गये। आसपास भी देखा पर सिवाय जंगलियों के द्वारा छोड़े गये ढोलों के कुछ न था। उन्होंने खूब जोर-जोर से वसन्त को पुकारा। एक दो घंटे वसन्त की खोज में बीत गये, पर सब व्यर्थ गया।

रमेश भावातिरेक हो उसी समय आगे बढ़ना चाहता था लेकिन उसके पिता ने उसे समझाया, "इस रात के समय अनजान वन के मार्ग में प्रवेश कर खुद को खतरे में डालने से वसन्त का कुछ भला न होगा। यदि हम सावधानी से सोच-विचार कर आगे बढ़ें तो वसन्त को पाना अधिक संभव है। न मालूम क्या हुआ है? परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि जंगली उसे अपने साथ पकड़कर ले गये हैं, या यहीं कहीं मारकर डाल गये हैं। ईश्वर करे ऐसा न हुआ हो। चलो डेरे पर चलें और आगे किस प्रकार कार्य करना है इस पर विचार किया जाये। जंगू तुम उस जंगली कुत्ते को ठीक से बांधकर डेरे पर ले चलो। देखना वह तुम्हें काटने न पाये। उसके काटने की हमारे पास कोई दवा नहीं है।"

रमेश और उसके पिता डेरे की ओर लौट पड़े और जंगू बंधे कुत्ते को लाने के लिये वहीं रुक गया।

वसन्त का पीछा

रात भर रमेश को नींद नहीं आई। उसका सिर चक्कर खाता रहा। उसने वसन्त की सुरक्षा के लिये मन ही मन ईश्वर से कई बार प्रार्थना की। यदि इस भ्रमण में वसन्त को कोई हानि पहुंची तो अकेले ही वापस न लौटने का रमेश ने दृढ़निश्चय कर लिया। प्रातः के समय उसे थोड़ी देर के लिये झपकी आ गई।

सूर्योदय होते ही तीनों फिर चले। जंगू के साथ रस्सी में बंधा कुत्ता था। उसका मुंह जंगू ने इस प्रकार बांध दिया था कि वह काट नहीं सकता था। थोड़ा-सा भौंक अवश्य लेता था और मुश्किल से कुछ खा पाता था। जंगू ने कहा, "अब यह कुत्ता मुझसे बहुत डरता है और डर के कारण मेरा कहना भी मानने लगा है। यह जंगली कुत्ता सूंघकर शिकार करने में बहुत तेज होता है और यही अब हमें वसन्त के मार्ग पर ले चलेगा,

लेकिन पीछा करने में देरी नहीं करनी चाहिये।''

वे तीनों अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर अपने टट्टुओं के साथ चल पड़े और उस वृक्ष के पास आये जहां वसन्त रात में चढ़ा था। वहां आकर कुत्ते को झाड़ सुंघाया गया फिर वसन्त के वे कपड़े जो वह छोड़ गया था। उसे पुचकार कर जंगू ने आगे चलने को कहा। उसके हाथ में वसन्त के वे जूते थे जो वह हमेशा पहना करता था। कुत्ता एक बड़ी लंबी रस्सी से बंधा हुआ था जिसे जंगू ने अपने कमर से बांध रखा था। वह हाथ में एक डंडा भी लिये हुए था जिससे कुत्ता बहुत डरता था। जंगू और कुत्ता भाग चले।

कुत्ते और जंगू के पीछे एक टट्टू पर सवार रमेश और सबसे पीछे दो टट्टुओं के साथ सामान लिये हुये रमेश के पिता। यह दल एक घंटे तक इसी प्रकार आगे बढ़ता गया। अभी तक मार्ग में कहीं कोई विशेष रुकावट न आई थी। जंगल घना होने पर भी पगडंडी साफ थी। करीब डेढ़ घंटे बाद कुत्ता एक छोटी-सी झील के किनारे रुक गया और वहीं आसपास चक्कर लगाने लगा। शीघ्र ही रमेश और उसके पिता जंगू के करीब पहुंच गये।

जंगू ने कहा, ''मालूम होता है यहां से आगे कुत्ते को मार्ग नहीं मिल रहा है। फिर उसने दो बार कुत्ते को वसन्त के कपड़े और जूते सुंघाये। थोड़ी देर यहां-वहां घूमकर कुत्ता पास की एक घनी झाड़ी में घुस गया। जंगू भी उसके पीछे भागा। रमेश भी इन लोगों के पीछे आ रहा था। रमेश के पिता को बीच-बीच में टट्टुओं को संभालने में बड़ा कष्ट हो रहा था।

अचानक कुत्ता एक बड़े वृक्ष के पास पहुंचकर वंहां की घास सूंघ-सूंघकर जितनी जोर से हो सकता था भौंकने लगा लेकिन लाख कोशिश करने पर भी वह आगे नहीं बढ़ा। रमेश और जंगू वहां और आसपास की जगह का बारीकी से निरीक्षण करने लगे। कुत्ता एक चट्टान के पास खड़ा होकर भौंक रहा था। चट्टान क्या थी मामूली-सा पत्थर था। रमेश ने उसे हाथ से हटाया। उसके नीचे एक छोटी पॉकेट नोट बुक मिली। तभी जंगू खुशी से चिल्ला उठा, ''अरे, यह तो वसन्त की है। यह

कुत्ता हमें यहां तक ठीक रास्ते पर लाया है।''

रमेश ने कुछ सोचकर कहा, ''यह अवश्य ही वसन्त ने खुद इस पत्थर के नीचे रखी होगी। नहीं तो इस पत्थर के नीचे कैसे आती।'' नोट बुक खोलकर देखी तो देखा कि एक पृष्ठ पर कुछ लिखा हुआ था। ऐसा लग रहा था वसन्त ने बड़ी जल्दी-जल्दी में कुछ लिखा है। रमेश ने पढ़ना शुरू किया। ''रमेश, मेरी यह आशा करना कि नोट बुक तुम्हें मिलेगी, करीब-करीब व्यर्थ ही है। पर तब भी मैं लिख रहा हूं। इस समय जंगली वृक्ष के नीचे आराम कर रहे हैं। दो व्यक्ति मेरे ईर्दगिर्द घूम रहे हैं। उनकी आंख बचाकर सोने का बहाना कर मैं यह लिख रहा हूं। यह नोट बुक इस पत्थर के नीचे छोड़ रहा हूं जिससे वह कुछ दिन तक तो सुरक्षित रहे। यदि भाग्यवश तुम्हें यह नोट बुक मिल जाये तो भी मुझे छुड़ाने की कोशिश न करना और लौट जाना। अभी तक का मार्ग बहुत दुर्गम था। और अब आगे न मालूम क्या होगा? यद्यपि ये जंगली हैं किन्तु इन्होंने मुझे अधिक कष्ट नहीं दिये हैं... मैं...।'' मालूम होता था कि किसी कारण से उसने नोट बुक लिखनी बंद कर दी थी।

''अब आगे क्या किया जाये?'' जंगू ने पूछा।

''क्या करना है, कोशिश करो कि कुत्ता आगे बढ़े।'' अब फिर एक बार कोशिश की गई। कुत्ता एक पहाड़ी रास्ते से आगे बढ़ चला। दोपहर हो गई थी पर गर्मी महसूस नहीं हो रही थी। कुछ ठंड ही मालूम हो रही थी। धीरे-धीरे उस पहाड़ी के शिखर पर यह दल पहुंचा। रमेश के पिता के कहने पर सब लोग कुछ देर के लिये रुक गये। जंगू एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़ गया। उसने रमेश की दूरबीन से चारों ओर दृष्टिपात किया। उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव आये। वह शीघ्र ही नीचे आया और रमेश को ऊपर चढ़कर देखने के लिये कहा।

जंगू की सहायता से रमेश वृक्ष पर चढ़ा और देखा कि उस पहाड़ी के दूसरी ओर एक भयानक खाई थी। और खाई के उस पार जंगलों के बीच कुछ स्थान साफ किया गया था। आसपास कुछ झोंपड़ियां दिखाई दीं और

एक वृक्ष पर ऊंचा झण्डा फहरा रहा था। झण्डा पीले रंग का था। नीचे उतरकर जब रमेश के पिता को यह सब मालूम हुआ तब उन्होंने कहा, "अब हमें बहुत संभलकर आगे बढ़ना है। अवश्य ही यह जंगलियों की बस्ती है और यहीं वसन्त भी कैद होगा। उसे छुड़ाकर भागना कोई हंसी खेल नहीं है और फिर रमेश, मेरा ख्याल है कि बस्ती जंगलियों की मुख्य बस्ती का एक छोटा-सा भाग है। मुख्य बस्ती यहां से कोसो दूर जंगल में कहीं न कहीं अवश्य होगी। अब हमें पहले यहां आसपास कोई ऐसा स्थान देखना चाहिये जहां हम निडर होकर एक दो रातें काट सकें।"

थोड़ी देर ढूंढ़ने के पश्चात् उन्हें एक वृक्ष के नीचे एक ऐसा स्थान मिल ही गया। दो चार चट्टानों को भीतर ले, उसके ऊपर उन्होंने अपना छोटा-सा तम्बू तान दिया। वे चट्टानें उनके लिये पलंग आदि का काम भी देती थीं। पीछे की ओर घने वृक्ष के नीचे चट्टानों की आड़ में टट्टुओं को बांधने की भी व्यवस्था की गई।

फिर दूरबीन, पिस्तौल आदि सामान लेकर तीनों पैदल ही कुत्ते के साथ आगे बढ़े। शीघ्र ही वे खाई के किनारे आ पहुंचे। खाई बहुत गहरी थी। नीचे देखने पर चक्कर आ जाता था। तली में बहुत गहरे पर पानी बह रहा था। बहता हुआ पानी और कुछ जंगली पशु-पक्षियों की आवाजें ही उस स्थान की निस्तब्धता को भंग कर रही थीं। दृश्य भयंकर होने पर भी कुछ क्षण मात्र के लिये मनमोह लेता था। प्रकृति के इस सौन्दर्य को देखकर मानना पड़ता है कि इसको भी कोई बनाने वाला है।

खाई पार की

थोड़ी देर बाद रमेश बोल उठा, "लेकिन इस खाई को पार करना तो असंभव ही है।"

"मेरा ख्याल है कि जब जंगली इसी मार्ग से गये हैं, तो खाई पार करने

का कोई तरीका अवश्य ही होना चाहिये। शायद यह कुत्ता इसमें हमारी मदद कर सके। जंगू, अब इस कुत्ते का मुंह बिलकुल कस दो। जरा भी भौंकने न पाये, अन्यथा इसका भौंकना हमें संकट में डाल देगा," रमेश ने कहा।

जंगू ने वैसा ही किया। कुत्ते को कुछ ढील दी गई। कुत्ता खाई के किनारे-किनारे चल पड़ा। कुछ ऊपर जाकर खाई के किनारे एक स्थान पर एक चट्टान कुछ गोलाई-सी लिये खाई के ऊपर झूल रही थी वहां पहुंचकर कुत्ता रुक गया। ठीक वैसी ही एक विशालकाय चट्टान खाई के दूसरे किनारे से इस चट्टान की ओर बढ़ी हुई थी। इन दोनों चट्टानों के छोरों के बीच बीस फुट का अंतर था। कहने के लिये एक प्रकार की प्राकृतिक कमानी थी जिसके नीचे से होकर उस गहरी खाई की पहाड़ी नदी बहती थी।

यह कमानी बीच में से टूटी हुई थी। इसलिये उस पार जाने के लिये कोई विशेष तरीका नहीं दिखाई देता था। उस चट्टान पर आगे बढ़ने से रमेश के पिता ने रमेश को रोक दिया। रमेश ने निराशा की हंसी हंसकर कहा, "वैसे तो मैं टूर्नामेंट में बीस-बाईस फुट लांग-जम्प लगा ही लेता था लेकिन यह छलांग मारकर खाई पार करना दुनिया के चैम्पियन के लिये भी असंभव है। भले ही वह तीस फुट क्यों न कूदता हो। अब इसे पार करने की युक्ति तो जंगू ही निकाल सकता है।"

दूसरी ओर चट्टान के पास ही में एक वृक्ष की बड़ी-बड़ी डालें ऊपर उठी हुई थीं। इस ओर के एक वृक्ष में भी वैसी ही दो डालें थीं। अच्छी तरह से देखने पर मालूम हुआ कि उन डालों में कुछ रस्सी के समान बेले बंधी हैं।

जंगू ने कहा, "स्पष्ट है कि ये जंगली, रस्सी के पुल के सहारे ही इन चट्टानों से खाई पार करते हैं। और काम हो जाने पर इस पुल को तोड़ डालते हैं या बेलों को वापस खींच लेते हैं जिससे कि कोई इस ओर से खाई पार कर वहां न जाये। फिर मुख्य मार्ग से ये चट्टानें बहुत आड़ में

है। इसलिये सहसा किसी की दृष्टि में नहीं आती। अब हम भी रस्सी के पुल से चट्टान पार करने की कोशिश करेंगे। चलो, वापस लौट चलें।''

वे वापस आये। पेट पूजा की और रस्सी आदि सामान लेकर दोपहर के समय उस चट्टान के पास जा पहुंचे। रस्सी के दो छोर मजबूती से इस ओर के वृक्ष में बांध दिये गये। अब प्रश्न उठता था कि दूसरी ओर के वृक्ष पर रस्सी कैसे पहुंचाई जाये?

जंगू ने उस ओर फंदे बांधकर रस्सी से वृक्ष की डालियों को फंसाना चाहा, पर सब व्यर्थ रहा। बड़ी देर तक प्रयत्न करने के बाद रस्सी का फंदा दूसरी ओर की डाल में फंस ही गया। जंगू ने उसे तानकर देखा। वह पक्का मालूम हुआ। जंगू ने डाल से बंधी दूसरी रस्सी का छोर अपनी कमर से बांध लिया और रमेश से कहा, ''मैं इस रस्सी के सहारे उस ओर जाकर दूसरा छोर भी वहां मजबूती से बांध देता हूं जिससे आर पार की दूसरी रस्सी हो जायेगी और तुम लोग उस पार आसानी से आ सकोगे।''

जंगू उस ढीली रस्सी को पकड़े हुये चट्टान के नीचे झूल गया। उसके नीचे गहरी खाई थी, और पहाड़ी नदी वेग से बह रही थी। जंगू को इस प्रकार लटका देखकर रमेश का हृदय एकबारगी कांप उठा।

'यदि कहीं रस्सी टूटी तो?' आगे सोचना रमेश के लिये असह हो गया। जंगू धीरे-धीरे रस्सी पर लटका हुआ बढ़ता जा रहा था। रमेश और उसके पिता बीच-बीच में बोल उठते, ''संभलकर जाना, जंगू, संभलकर जाना,'' उनकी आवाज आसपास की चट्टानों से और गहरी खाई से प्रतिध्वनित होकर गूंज उठती थी। धीरे-धीरे जंगू दूसरी ओर पहुंच ही गया।

उसने रस्सियों के दोनों फंदे वृक्ष से अच्छी तरह कस दिये और अब रमेश तथा उसके पिता से उसी प्रकार उस ओर आने को कहा। अब इस तनी हुई रस्सी को पकड़कर दूसरी ओर आना सरल हो गया था क्योंकि रस्सी तनी होने के कारण चट्टानों के बीच केवल पंद्रह फुट का अन्तर पार करना था। शीघ्र ही रमेश और मिहतो जी दूसरी ओर पहुंच गये। अब

अपने अस्त्र-शस्त्र संभालकर जंगू को आगे कर, दूरबीन का उपयोग करते हुए ये तीनों उस पीले रंग के झण्डे को लक्ष्य कर आगे चल पड़े।

उस पार

चलते-चलते उन्हें एक पगडंडी मिली। उसी के सहारे वे आगे बढ़ते गये। अब उस पीले झण्डे से वे करीब आधा मील दूर थे। सहसा जंगू ने कुछ इशारा किया। दूर एक डाल पर चढ़ा कोई जंगली फल खा रहा था। पास ही एक जंगली कुत्ता था। वह कुत्ता गिलहरी के समान प्राणियों के पीछे कूद-फांद रहा था।

सहसा इन लोगों को देखकर कुत्ता इनकी ओर लपका। यद्यपि जंगू के हाथ में डंडा था तब भी जंगू ने चिल्ला कर कहा, "रमेश, इसे गोली मार दो, नहीं तो इससे बचना असम्भव है।" रमेश ने पिस्तौल संभाली और जंगू की आज्ञा का पालन किया। गोली लगते ही कुत्ता चीत्कार करता हुआ जमीन पर गिर पड़ा और छटपटाने लगा।

इसी बीच वह जंगली जल्दी-जल्दी वृक्ष पर से उतरा। इससे पहले कि वह अपना तीर कमान संभाले जंगू और मिहतो जी उस पर टूट पड़े और उसके हाथ-पैर बांध दिये। जंगू के कहने से रमेश ने उस छटपटाते हुये कुत्ते पर एक गोली और चलाई जिससे कुत्ता मर गया। इसका जंगली पर काफी प्रभाव पड़ा। वह मारे डर के कांपने लगा।

मिहतो जी ने उससे कुछ कहा। इस समय मिहतो जी किसी अन्य भाषा का उपयोग कर रहे थे। वह जंगली अपनी भाषा में कुछ बड़बड़ाने लगा तब मिहतो जी ने उसी की भाषा में उससे बोलना शुरू किया। बीच-बीच में वह पिस्तौल भी दिखाते थे और कुत्ते की ओर इशारा भी करते जाते थे। थोड़ी देर बाद उन्होंने जंगू और रमेश से कहा, ""मालूम होता है यह उन पहरेदारों में से एक है जो पीले झण्डे के पास की झोंपड़ी

में रहते हैं। यहां से इनका गांव प्रारंभ होता है। और गांव की सीमा पर कुछ पहरेदार रखे जाते हैं, जिनमें से यह एक है। पास ही में एक पहाड़ पर इनका देवस्थान है। इन पहरेदारों का काम इस देवस्थान की देखभाल करना है।''

रमेश के कहने पर जंगली से बहुत देर तक वसन्त के विषय में प्रश्न किये गये। पिस्तौल से धमका-धमका कर उससे मालूम किया गया कि एक कैदी दो दिन पूर्व ही पकड़कर इस गांव में लाया गया है। वह अभी तक जीवित है। शीघ्र ही उसे इस देवस्थान पर लाया जायेगा। सेठ के विषय में पूछताछ करने पर यह अवश्य पता लगा कि चार कैदी दो माह पूर्व वहां लाये गये थे। लेकिन उनमें से केवल अब तीन व्यक्ति ही जीवित हैं।

उस जंगली को साथ लेकर ये तीनों उसकी झोंपड़ी की ओर बढ़ चले। उसने बताया कि दो पहरेदार और हैं। उस जंगली को उन्होंने जोर देकर कहा कि वह उन पहरेदारों को बिना तीर कमान के अपने पास बुलाकर पकड़वा दे। अन्यथा पिस्तौल का निशाना बनाकर उसका कुत्ते जैसा हाल कर दिया जायेगा।

पास की चट्टान पर मिहतो जी और रमेश पिस्तौल संभाले खड़े हो गये। जंगली को खुले में खड़ा किया गया और दोनों पिस्तौलें उसकी ओर तान दी गईं। जंगू पास ही के वृक्ष पर चढ़ गया। मिहतो जी ने जंगली को अच्छी तरह जता दिया कि वह एक दो डग ही यहां वहां जा सकता है। भागने या धोखा देने की कोशिश करने पर निर्दयता से मारा जायेगा।

जंगली ने अपने साथियों को पुकारना शुरू किया और दोनों आ भी गये। फिर उन निशस्त्र पहरेदारों को उस जंगली की सहायता से पकड़ लिया गया। तीनों कैदियों को साथ लेकर वे उस झोंपड़ी की ओर बढ़ गये। मिहतो जी उन जंगलियों से बातें करने लगे। उन्हें बता दिया गया कि उनका एक दोस्त, वसन्त, पकड़कर यहां लाया गया है और यदि ये लोग सब बातें सच-सच बता देंगे तो उन्हें मारा नहीं जायेगा। उनका उद्देश्य केवल कैदियों को छुड़ाना ही है।

यति

मिहतो जी बहुत देर तक उन जंगलियों से बातें करते रहे। उन्हें उनकी भाषा बोलने में कुछ कठिनाई अवश्य हो रही थी। आखिर उन जंगलियों से जो बातें वह जान सके वह उन्होंने रमेश और जंगू को बताईं। उत्तर में एक पहाड़ी थी जो बर्फ से ढकी रहती थी। पास ही में नीचे की ओर एक बहुत बड़ी झील थी। जंगलियों के बुजुर्ग बताया करते थे कि शरद ऋतु की पूर्णिमा के दिन कोई भी उस ओर जाने की हिम्मत नहीं करता था। उसका कारण था 'यति'। यति उनके लिये एक रहस्य था। वह एक प्रकार का हिम-मानव समझा जाता था। किसी ने उसको देखा न था, परन्तु उसके बड़े-बड़े पदचिह्न ठंड के दिनों में बर्फ पर अवश्य देखे गये थे। सबके लिये वह एक शैतान था। उसे देखकर कोई जीवित न बचता था।

बहुत दिनों से यति के डर से उस जाति में एक विचित्र प्रथा चली आ रही थी। उस सरोवर के किनारे एक लकड़ी की मजबूत झोंपड़ी बनी थी, झोंपड़ी क्या थी एक प्रकार का कैदखाना था। शरद पूर्णिमा के आठ दिन पूर्व दो व्यक्तियों को उस झोंपड़ी में रख दिया जाता था। उन्हें बहुत अच्छे प्रकार का खाना खिलाया जाता था किन्तु वे झोंपड़ी के बाहर नहीं जा सकते थे। पूर्णिमा के एक दिन पूर्व तक रोज सुबह से शाम तक उन पर पहरा रहता था और पूर्णिमा के एक माह बाद जब लोग वहां जाते थे, तो वे दो व्यक्ति गायब हो जाते। उनका क्या होता था किसी को कुछ पता नहीं। वे पहले से ही यति के नाम से डरे रहते थे, कोई कहता यति उन्हें अपने देश ले गया। हर एक के अपने-अपने ख्याल थे, सच बात किसी को मालूम न थी। इसलिये ये जंगली शरद पूर्णिमा से पहली पूर्णिमा को खाई के उस पार जाकर किन्हीं विदेशियों को इस प्रथा के लिये पकड़ते थे। अगर विदेशी नहीं मिलते थे, तो उन्हीं में से किन्ही दो व्यक्तियों को झोंपड़ी में रहना पड़ता था। इनका चुनाव जाति के बुजुर्ग लोग करते थे।

जंगलियों के अनुसार कुछ दिन पूर्व पांच विदेशी पकड़कर लाये गये

थे और उन्हें यति को दान करने के लिये तैयार किया जा रहा था। एक दिन पहले एक बलिष्ठ युवक भी पकड़कर लाया गया, और अब इन छः व्यक्तियों में से दो का चुनाव आनेवाली शरद पूर्णिमा के लिये किया जाने वाला था।

रमेश को यह समझने में देर न लगी कि वे पांच कैदी सेठ और उसके साथी होंगे और अंत में लाया गया युवक उसका दोस्त ही होगा। मिहतो जी और रमेश इन सबको किस प्रकार छुड़ाया जाये इस विषय पर विचार करने लगे।

इसी समय झोंपड़ी के बाहर किसी के पुकारने की आवाज आई। पहले वाले जंगली से चुप रहने के लिये कहा गया। पुकारने वाला पुकारते-पुकारते, गुस्से से झोंपड़ी में घुसा। तीनों उस पर टूट पड़े एवं कैद कर लिया और पिस्तौल उसकी ओर तान दी गई। पहले जंगली से उसका हाल पूछने के लिये कहा गया। पहला जंगली पिस्तौल के कारण, कुत्ते की मौत और अपने एक साथी के पैर के घाव को देखकर एकदम इन लोगों के अधीन था।

थोड़ी बातचीत के बाद जंगली ने मिहतो जी को बताया, कि आज शाम को इनके एक देवस्थान पर जाति की सभा है, उसमें यति को अर्पण किये जाने वाले कैदियों का चुनाव होगा, और सभा में सम्मिलित होने के लिये उनका मुखिया अपने कुछ सिपाहियों के साथ आज यहां से निकलेगा। गांव के सब जंगली पास के देवस्थान में कैदियों का चुनाव देखने के लिये एकत्रित होंगे।

जंगलियों का मुखिया

मिहतो जी और रमेश गहरे सोच में पड़ गये। बात स्पष्ट थी, सेठ और उसके साथियों के साथ वसन्त भी कैद था।

मिहतो जी चाहते थे कि न केवल वसन्त अपितु सभी को इस संकट से छुड़ाया जाये। यति, हिम-मानव के बारे में उन्होंने भी सुन रखा था, परन्तु अभी तक वैज्ञानिकों को हिम-मानव के विषय में पक्के सबूत न मिले थे।

सहसा कुछ विचार कर मिहतो जी की आंखें चमक उठीं। उन्होंने उस जंगली से प्रश्न किया, "क्या इस मुखिया का जंगलियों पर अच्छा प्रभाव है?" "जी हां, मुखिया का शब्द पत्थर की लकीर है। उसके कहे बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। सब उससे डरते हैं, उसका क्रोध बड़ा भयंकर है," जंगली ने उत्तर दिया।

"तो क्या मुखिया के कहने पर यह सभा स्थगित हो सकती है? और क्या कैदियों को छुड़ाया जा सकता है?"

"वैसे तो लोग मानेंगे नहीं क्योंकि वे हिम-मानव से बहुत डरते हैं, लेकिन मुखिया अवश्य सभा स्थगित करा सकता है। परन्तु कैदियों की मुक्ति के बारे में कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता यद्यपि यहां मुखिया का शब्द ही कानून है," जंगली ने बताया।

मिहतो जी थोड़ी देर अपनी विचारधारा में बह गये, फिर पांच मिनट उन्होंने जंगू और रमेश से सलाह की और कहा, "बस केवल यही एक उपाय है, वसन्त और कैदियों को बचाने का। इससे या तो वे बच जायेंगे या हम लोग कैद हो जायेंगे। रमेश तुम तैयार हो न?"

"इसमें भी कोई शक है। हां, यदि हो सके तो जंगू को वापस भेजने की कोशिश करियेगा।" रमेश ने जवाब दिया।

"लेकिन बिना वसन्त और रमेश के मैं यहां से वापस नहीं जाऊंगा," बीच ही में जंगू बोल उठा।

"खैर चलो, पहले तो मुखिया को कैद करना होगा और यह काम बड़ी सावधानी से करना होगा।" फिर मिहतो जी ने पहले जंगली को छोड़, बाकी के हाथ-पैर अच्छी तरह बंधवा दिये। मुंह में कपड़ा ठूंस दिया और पहले से डरे हुए जंगली से कहा, "तुम उस रास्ते की ओर चलो

जहां से मुखिया की डोली आनेवाली है। डोली दिखने पर तुम दौड़ते हुए उनकी तरफ जाकर उन पर हमला करना। बाकी हम लोग देख लेंगे। इससे जरा भी चूके तो यह देखो पिस्तौल।"

ऐसा कहकर उन्होंने पिस्तौल की ओर इशारा किया। जंगली सिर से पैर तक कांप उठा। बेचारा उनके साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर जाकर रमेश ने दूर तक अपनी दूरबीन से देखते हुए कहा, "वह देखो डोली आ रही है। दो व्यक्ति उसे कंधे पर ला रहे हैं, और दो साथ में चल रहे हैं। शायद यही मुखिया की डोली है।"

वे तीनों रास्ते से एक तरफ हटकर आगे बढ़ने लगे। जंगली सीधे रास्ते से आगे बढ़ता गया। रमेश जंगली पर आंख रखे था। जंगली भी यह समझता था। डोली से करीब सौ गज दूर रह जाने पर जंगली ने कुछ कहा, और वह जमीन पर लेट गया। शायद वह अपने मुखिया का अभिवादन कर रहा था। अब वह और आगे पहुंचा, डोली चली आ रही थी। इतने में वह जंगली सामने के सिपाही पर टूट पड़ा और फुर्ती से उसने उसके हाथ पैर बांध दिये और फिर दूसरे सिपाही पर हमला किया। यह घटना उन जंगलियों के लिये बिलकुल अनहोनी थी। वे स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकते थे कि उनका ही आदमी उन पर टूट पड़ेगा। वे तीनों उस पर टूट पड़ने ही वाले थे कि पास ही पिस्तौल की आवाज हुई, और वाहक जमीन सूंघने लगा। मिहतो जी ने उसके पैर में गोली मारी थी। दोनों जंगली उसे इस प्रकार असहाय और तड़पता देखकर भय से कांप उठे। इतने में जंगू और रमेश दौड़े आये। उन्होंने लपककर पहले जंगली की सहायता से बचे हुए जंगली के हाथ पैर कसकर बांध दिये।

जब यह सब हो रहा था तब उस डोली में बैठा हुआ विशालकाय जंगली अवाक्-सा यहां-वहां देखकर कुछ चिल्ला रहा था, शायद नाराज हो रहा था। उसकी इच्छा अपने स्थान से हिलने की न थी, लेकिन वह अपने आदमियों को पकड़ा जाते देख डोली से उतर पड़ा। उसने अपना धनुष-बाण सम्भाला, इससे पूर्व कि वह कुछ करता, मिहतो जी ने लपककर उसका धनुष-बाण छीन लिया।

वह मिहतो जी को नहीं देख पाया। हवा में एक गोली चलाते हुए उन्होंने गरज कर जंगली भाषा में उससे कुछ कहा, फिर जंगली की ओर देखा, उसने पहले अपने मुखिया को झुककर अभिवादन किया फिर मिहतो जी के कहने पर सब हाल मुखिया को कह सुनाया। पिस्तौल की बात सुनकर मुखिया विस्मित-सा हुआ, पर पिस्तौल की करामात पर उसे विश्वास नहीं हुआ। परन्तु तड़पते जंगली को खून से लथपथ देखकर वह कुछ डरा।

मुखिया ने पूछा, "आप लोग चाहते क्या हैं?" मिहतो जी ने जवाब दिया, "हाल ही में आपके द्वारा पकड़ा गया कैदी और पहले पकड़े गये कैदियों की रिहाई।" मुखिया कुछ सोच में पड़ गया फिर उसकी आंखें कुछ सोचकर कुटिलता से चमक उठीं, पर यह बात मिहतो जी की तीव्र दृष्टि से छिप न सकी। मुखिया बोला, "बस इतना ही, अभी मेरे साथ चलो। मैं सबको रिहा कर देता हूं।" मिहतो जी मुस्कराकर बोले, " हम लोग दूध पीते बच्चे नहीं हैं, आप के साथ चलें और कैद हो जायें। नहीं यदि अपना भला चाहते हो, तो हमारे कहने के अनुसार करना होगा। तुम्हारे साथ हम नहीं चलेंगे तुम्हें हमारे साथ चलना होगा।"

वह इतना ही कह पाये थे कि किसी ने पीछे से उनका पैर खींचा और वह नीचे गिर पड़े। रमेश बात को ताड़ गया। पास पड़ा हुआ जंगली उनकी ओर खिसक आया था। वह अपने हाथ पैर के बंधनों को छुड़ाने

में सफल हो गया था। उसी ने मिहतो जी को गिराया था। बिना कुछ आगा पीछा किये, रमेश ने उसके हाथ को लक्ष्य कर पिस्तौल चला दी। गोली हाथ में लगी और वह जंगली तड़पने लगा।

मुखिया ने पिस्तौल का प्रभाव अपनी आंखों से देखा, तो भयभीत हो उठा। मिहतो जी संभल कर उठे, फिर मुखिया से बोले, "देखो हम नाहक खून-खराबा नहीं करना चाहते। तुम हमारे साथ चलो और जैसा बताता हूं करो नहीं तो यह पिस्तौल तुम्हारा खून पी जायेगी।"

मुखिया तैयार हो गया, फिर उन्होंने जख्मियों के हाथ पैर कसकर बांध दिये, और उन्हें एक झाड़ के पीछे डाल दिया। उसके बाद मुखिया से कहा, "तुम चाहो तो इन्हें छुड़ा सकते हो।" कमर में रस्सी बांध कर जंगू ने एक छोर अपने हाथ में ले लिया। यही हाल मुखिया के साथ किया गया। उसकी रस्सी मिहतो जी ने अपने हाथ में ले ली, फिर जंगू और मिहतो जी अपने कैदियों सहित तैयार हो गये। रमेश जंगलियों के सभा स्थान की ओर जाने के लिए तैयार हो गया। दोनों पिता-पुत्र विकट परिस्थितियों में फंसकर एक दूसरे से विदा ले रहे थे। इसी समय मिहतो जी ने रमेश से कहा, "बेटा रमेश, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। जैसे तुम बहादुर और बुद्धिमान हो वैसे ही तुम दयालु भी हो। याद रखो, तुम्हारे हाथ में पिस्तौल जैसा खतरनाक अस्त्र है। उसका उपयोग बहुत संभल कर करना। हर हालत में तुम अपनी रक्षा अवश्य करना पर जंगलियों पर नाहक गोली न चलाना। जाओ, मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।"

रमेश ने कहा, "आपकी और माताजी की कृपा से अवश्य ही मैं फिर आपके दर्शन प्राप्त करूंगा। डरने की कोई बात नहीं, यदि वसन्त को बचाने में मैं काम आया तो मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।" इतना कहकर रमेश जंगलियों के गांव की ओर चल पड़ा। मिहतो जी ने जंगली को समझा दिया था कि क्या करना है। रमेश को जंगली से बोलने की आवश्यकता न थी। रमेश के जाते ही खाई की ओर चल पड़े।

शीघ्र ही वे उस स्थान पर पहुंचे जहां से खाई को पार करना था। जंगू और मिहतो जी के खाई पार करने का तरीका देखकर जंगली हंस पड़े। उन्होंने पास ही की चट्टान के नीचे छिपाकर रखी हुई एक जंगली रस्सी की मजबूत सीढ़ी-सी निकाली और एक जंगली के हाथ छोड़ देने पर इस कुशलता से दूसरी ओर के वृक्ष पर फेंका कि वह अच्छी तरह तन गई। और एक छोटा-सा पुल बन गया। ऊपर वैसी ही एक और रस्सी आप ही आप तन गई।

अब ऊपरी रस्सी को पकड़कर नीचे की रस्सी पर पैर देते हुए दूसरी ओर जाना बहुत सरल था। मिहतो जी ने मुखिया से कहा, ""ध्यान से सुनिये, अब हम इन दोनों जंगलियों को रिहा करेंगे। आप इन्हें यह आदेश देकर वापस भेजिये कि शीघ्र ही सुबह होने तक वसन्त और अन्य विदेशी कैदी रिहा कर दिये जायें और उनके साथ केवल वही जंगली यहां तक आयें जो रमेश के साथ हैं, बाकी सब गांव में ही रहें। खाई के पार आने की कोशिश एक भी जंगली न करे।""

ये बातें खाई पार करने के बाद खाई के दूसरी ओर हो रही थीं। रात हो चुकी थी। सभा का समय निकट आ रहा था। दो चार घंटे शेष थे। मिहतो जी ने मुखिया से फिर कहा, "देखिये, जो कुछ मैं कहता हूं उसमें जरा भी ढील होने पर मैं पिस्तौल से इस चट्टान पर खड़ा कर तुम्हें निशाना बनाऊंगा और तुम छटपटाते हुये इस गहरी खाई में गोते लगाओगे। रमेश अवश्य ही मरने से पूर्व दो चार जंगलियों को खतम कर देगा। यदि ये जंगली तुम्हारा कहना मानते हैं और तुम अपनी जान बचाना चाहते हो तो केवल यही एक रास्ता है। खूब समझा-बुझा दो अपने साथियों को।""

मुखिया ने बहुत देर तक अपने साथियों से बातचीत की। मिहतो जी खूब अच्छी तरह से सब बात समझ रहे थे। उन्होंने देखा कि मुखिया बहुत डर गया है और उसके साथी भी। उन्होंने फिर एक बार कहा, "हमारे साथी और कैदी हमें वापस मिल जायें तब हम अपने रास्ते चल देंगे और आप अपने, यह हमारा वचन है।"

मुखिया ने अपने साथियों को खूब समझाया और अपने गले का तावीज निकालकर उन्हें दिया और कहा, "यह तावीज लोगों को दिखाना, सब तुम्हारा कहना अवश्य मानेंगे। यह मेरा तावीज है। सब लोग इसकी सत्ता को मानते हैं।" फिर जंगली मुखिया को दण्डवत प्रणाम कर खाई पार कर चल दिये।

जंगू और मिहतो जी चिन्तातुर होकर समय काटने लगे। जंगू बीच-बीच में वृक्ष पर चढ़कर चन्द्रमा के प्रकाश में दूर तक देखने का प्रयास करता रहा।

छुटकारा

इधर रमेश उस जंगली के साथ पहाड़ों में छिपता हुआ उस स्थल की ओर जा रहा था, जहां सभा आयोजित की जाने वाली थी। वहां उन्हें छिपकर जाना था। शाम होते-होते वे वहां पहुंच गये और एक घने वृक्ष पर छिपकर बैठ गये।

कुछ जंगली आने लगे थे। पहाड़ की एक विशाल चट्टान को काटकर सामने एक भयंकर मूर्ति बनाई गई थी। मूर्ति अधिक सुन्दर न होते हुए भी आकर्षक थी। सामने दूर पर एक चबूतरा था।

कुछ देर बाद रमेश ने देखा, कि काफी जंगली जमा हो गये हैं। यहां-वहां मशालें जल रही हैं, उन मशालों का प्रकाश और चन्द्रमा का अति क्षीण प्रकाश मिलकर एक भय उत्पन्न कर रहे थे। दृश्य बड़ा भयावह था।

इतने में दूर से ढोलों की आवाज सुनाई देने लगी। मशालों का प्रकाश भी दृष्टिगोचर हुआ। आवाज प्रतिक्षण बढ़ती जाती थी और मन में भय का संचार होता था। उनके पास आने पर मालूम हुआ कि जंगली कैदियों को लिये आ रहे हैं। वसन्त को देखकर रमेश तिलमिला उठा। पर उसे

अभी कुछ देर तक और सब्र रखना था।

पत्थर से बनी मूर्ति के पास, एक ओर उन सब कैदियों को खड़ा कर दिया गया जिसमें वसन्त भी शामिल था। दस बारह जंगलियों ने कैदियों को चारों ओर से घेर रखा था। अब इस बात का फैसला होना था, कि किन दो कैदियों को यति की भेंट चढ़ाया जाएगा।

कुछ जंगली सामने के चबूतरे पर बैठ गये। ये ही लोग वहां के बुजुर्ग मालूम होते थे, और इन्हीं को फैसला करना था। ये लोग थोड़ी देर तक आपस में बातचीत करते रहे। फिर कैदियों को चबूतरे के पास लाकर एक कतार में खड़ा कर दिया गया। चबूतरे पर से एक वृद्ध उठा और पंक्ति में खड़े कैदियों को ध्यान से पास आकर देखने लगा, फिर उसने दो कैदियों की ओर इशारा किया, उन्हें सामने लाया गया और फिर ढोल जोर-जोर से बजने लगे। रमेश समझ गया कि इन्हीं दो को यति के पास भेजा जाने वाला है। उन दो में से एक वसन्त भी था। रमेश सोचने लगा कि आगे क्या किया जाये।

अचानक जंगलियों में कुछ हलचल मच गई। दो जंगली कुछ चिल्लाते हुये वहां आ पहुंचे, रमेश की जान में जान आई। वे मुखिया द्वारा भेजे हुए दो जंगली थे। उन्होंने मुखिया का आदेश कह सुनाया, पर जंगली मानने को तैयार न थे। ठीक उसी समय रमेश का साथी जंगली चुपचाप वृक्ष पर से नीचे उतरा और फैसला करने वालों में आ मिला। उसने भी खूब जोर से पूरी ताकत से मुखिया के द्वारा भेजे गये जंगलियों का समर्थन किया, परन्तु फैसला करने वाली सभा का वृद्ध मुखिया यह बात मानने को तैयार न था। तब मुखिया के पास से आये जंगलियों ने मुखिया का तावीज निकालकर सबको दिखाया। लोग फिर जोर से चिल्लाये किन्तु वृद्ध की तीव्र और कठोर वाणी सुनकर सब चुप हो गये। जंगलियों में दो दल बनते दिखाई दिये, एक दल तावीज की बात से सहमत था, तो दूसरा दल हठधर्मी वृद्ध की बातें मान रहा था। रमेश यह सब देख रहा था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। इसी समय एक

अनपेक्षित घटना हुई। जो वृद्ध बोल रहा था, वह एकदम पीछे की ओर मुड़ा। पीछे दूर पर कोई भेड़िये जैसा जानवर बड़ी खूंखार आवाज निकालते हुए सभा की ओर दौड़ा आ रहा था। उसके मुंह से झाग निकल रहा था। रमेश ने कुछ ऐसा ही दृश्य पहले कभी देखा था। उसने बहुत पहले एक पागल कुत्ते को इसी प्रकार लोगों पर झपटते देखा था। रमेश सोचने लगा, 'तो क्या भेड़िये जैसा दिखने वाला जंगली जानवर पागल है?' इतने में लोगों में खलबली मच गई, वे इधर-उधर भागने लगे। आखिर रमेश ने बिना आगा-पीछा किये पागल जानवर को लक्ष्य कर पिस्तौल चला दी। पागल भेड़िया दहाड़ मार कर नीचे गिर गया। उसी समय कुछ पहरेदार डंडे लेकर आगे बढ़े। तावीज लेकर आये हुए जंगलियों का विरोध करने वाले वृद्ध ने यह सब देख लिया था। तड़पते भेड़िये को देख कर वह जोर-जोर से कुछ कहते हुए रमेश की ओर इशारा करने लगा। लोग भी समझ गये कि वृद्ध को भेड़िये से बचानेवाला यही युवक है। बहुत से जंगली रमेश के सामने जमीन पर लेट गये मानों वे उसका लोहा मान गये हों और उसे उनके बुजुर्ग को बचाने वाला समझने लगे। वृद्ध धीरे से रमेश के पास गया। उसने रमेश का अभिवादन किया, और फिर उसका हाथ पकड़कर उसे बड़ी नम्रता से चबूतरे की ओर ले गया। देखते ही देखते वृद्ध जोर-जोर से कुछ बोलने लगा। स्पष्ट था कि वह बहादुर रमेश की प्रशंसा कर रहा था। अब तावीज वाले आगे आये और उन्होंने रमेश की ओर इशारा करते हुए कुछ कहा। स्पष्ट था कि वे सब अब अपने मुखिया का तावीज लाने वाले जंगलियों की बात मानने को तैयार थे।

ठीक इसी समय मुखिया जैसा दिखने वाला एक युवक और उसके कुछ साथी आगे बढ़े और जोर-जोर से कुछ कहने लगे। भीड़ बीच-बीच में जय-जयकार कर रही थी। सभा का माहौल भी कुछ बदल गया था। वृद्ध और अन्य बुजुर्ग फिर चबूतरे पर बैठ गये। दस पंद्रह मिनट आपस में कुछ उनकी बात हुई और आखिर सबने रमेश को बीच में खड़ा किया।

भीड़ ने उसका जय-जयकार किया। रमेश और वसन्त गले मिले। सेठ और उसके साथी भी रमेश का साहस देख चुके थे और अब तक सारा मामला उनकी समझ में आ गया था। वे भी रह-रहकर रमेश के आगे हाथ जोड़ रहे थे। अनपेक्षित छुटकारे की खुशी के कारण उनकी आंखों से आनंद के आंसू बह रहे थे। वे तो जीने की उम्मीद ही छोड़ चुके थे। फिर रमेश और उसके साथ आया हुआ जंगली तथा सेठ समेत अन्य कैदियों को जंगलियों ने जयघोष के नारों के साथ विदा दी और रमेश की पार्टी खाई की ओर चल पड़ी। मुखिया जैसा दिखने वाला युवक इस पार्टी के साथ जाना चाहता था, पर वृद्ध नेता ने मुखिया का संदेश ध्यान में रखकर उसे ऐसा करने से रोका।

शीघ्र ही यह पार्टी खाई को पार कर गई। जंगू और मिहतो जी इन्हें देखकर प्रसन्न हुए। उन्होंने प्रातः होने तक वहीं रात्रि में विश्राम किया। रात भर आगे जाने की तैयारी होती रही।

सुबह मुखिया एवं जंगली को दूसरी ओर पहुंचा दिया गया। उन्हें खुश करने के लिये कुछ वस्तुएं उपहार में दी गईं। उन सब में से मुखिया को लोहे की एक पैनी कुल्हाड़ी और चमकदार दर्पण बहुत पसन्द आया। दर्पण में अपना ही मुख देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया।

जंगू और उसके साथियों ने पैनी कुल्हाड़ी से खाई के इस ओर के पेड़ की डालें काट दीं जिनसे होकर वे रस्सी का पुल बंध जाता था। उस पेड़ में अब किसी प्रकार की रस्सी नहीं फंसाई जा सकती थी और इस प्रकार जंगलियों के लिए फिर रस्सी के सहारे उस स्थान से खाई पार करना असम्भव हो गया था।

एक बार फिर पिस्तौल की एक गोली-खाई में चला दी गई। खाई की निस्तब्धता इस प्रकार शायद पहली बार ही भंग हुई थी। आवाज चट्टानों से टकराकर प्रतिध्वनित हुई। खाई के ऊपर लोग इकट्ठे होने लगे। मुखिया और जंगली अपने गांव की ओर चल पड़े।

रमेश की पार्टी जंगू के कमाण्ड में सेठ और उसके साथियों सहित

वापस चल पड़ी। जंगलियों के डर से बिना विश्राम किये यह पार्टी लगातार दिनभर चलती रही और शीघ्र ही उस मानव शिखर को पार कर नदी के किनारे पहुंच गई, जहां वसन्त जल-प्रपात की दुर्घटना से बचा था।

वापसी

उस दिन रात को उसी नदी के किनारे यह पार्टी आग तापते हुए बैठी हुई थी। इस समय सेठ गदगद होकर बारम्बार रमेश और मिहतो जी के प्रति आभार प्रदर्शन कर रहा था। वह कहने लगा, "विपिन, मैं जो कुछ कह रहा हूं उसे तुम भले ही सच न मानो पर मैं सब बातें अपने हृदय से कह रहा हूं। तुम सचमुच महान हो और तुम जितने महान हो उतना ही मैं नीच हूं यह स्वीकारते हुए आज मुझे जरा भी शर्म नहीं आ रही है। मैं पश्चाताप की अग्नि में जल रहा हूं। मैंने तुम्हारा नाजायज फायदा उठाया। न केवल तुम्हारा अनिष्ट किया बल्कि तुम पर खून का झूठा आरोप लगाकर जंगलों की खाक छानने पर बाध्य किया। इतना ही नहीं वरन् मेरी नीचता परम सीमा पर पहुंच गई, मैंने तुम्हारे पुत्र रमेश को मारना चाहा, मैं बड़ा स्वार्थी हूं, मुझे माफ कर दो।" यह कहते हुए सेठ जोर-जोर से रोने लगा।

मिहतो जी ने कहा, "सब भूल जाओ सेठ, जो हुआ सो हुआ पर...।"

"कैसे भूलें ? मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि मैं इतना गिर जाऊंगा और इसके बदले, इन दुष्कर्मों के बदले तुमने मुझे क्या दिया, एक दर्दनाक मौत से छुटकारा और जंगलियों से मुक्ति, सचमुच तुम धन्य हो। तुम्हारे इस व्यवहार ने मेरा हृदय एकदम परिवर्तित कर दिया है। जानते हो अब मैं क्या करने वाला हूं? तुम नहीं सोच सकते।"

"बताइये सेठजी, कहिये, अपना हृदय हल्का कर लीजिये।" "तो सुनो मेरे पास करोड़ों की संपत्ति है। तुम्हारे साथ मैं वापस चलूंगा और

कुछ दिन बाद कुछ परोपकारी बहादुर स्वयंसेवकों के साथ इसी प्रदेश में लौटूंगा। ये बेचारे जंगली आदिवासी सचमुच अंधविश्वास में जी रहे हैं और बहुत पिछड़े हुए हैं। मैं इनको सुधारने की कोशिश करूंगा। अंधविश्वासों से इनका पीछा छुड़ाऊंगा और इनमें शिक्षा का प्रचार करूंगा। भले ही मुझे इस कार्य में अपनी जान क्यों न गंवानी पड़े।''

''बड़े भले विचार हैं आपके सेठजी, ईश्वर आपको सफल करे।'' रमेश के पिता ने कहा।

''इन सबका कारण तुम हो, और इसलिये मैं अपनी संपत्ति का एक हिस्सा रमेश को देना चाहता हूं,'' सेठ ने कहा।

''नहीं सेठजी, परमात्मा की कृपा से मेरे पास बहुत कुछ है और मैं कांचन गुफा से यह सोना भी ले आया हूं। देखिये, यदि वसन्त पकड़ा न जाता तो आपकी भी मुक्ति नहीं होती। वसन्त अनाथ है और वही अच्छे इनाम का हकदार है।''

''मैं वसन्त को तो मालामाल कर ही दूंगा पर साथ ही अपने इन साथियों को भी, जिन्होंने दुख दर्द में मेरा साथ दिया।''

''केवल बातचीत से ही काम नहीं चलेगा सेठजी, सब लिखा पढ़ी अभी ही हो जाये। कौन जाने कल आप...''

''हर-हर, शिव-शिव,'' सेठजी ने अपने कानों पर हाथ रखा, ''अब यह सेठ पुराना सेठ नहीं है पर तुम्हारा इस प्रकार संदेह करना ठीक भी है आखिर मैंने कर्म ही ऐसे किये हैं। लो मैं यह लिख देता हूं।'' सेठ ने लिखते हुए पूछा, ''मेरे लिये और कोई प्रायश्चित?'' और सेठ की आंखों से अविरल अश्रु बह चले। यही सच्चा प्रायश्चित था। मिहतो जी ने उन्हें गले लगा लिया।

शीघ्र ही यह दल जनकपुर पहुंचा। रामेश्वरी के आनन्द का ठिकाना न रहा। उसे रमेश पर गर्व होने लगा, आखिर वह अपने पिता को ढूंढ़कर लाया था। इस सफलता का श्रेय कमाण्डर-इन-चीफ जंगू को दिया गया। सेठ ने उसके पिता को मालामाल कर दिया और शहर में जंगू की शिक्षा

की व्यवस्था कर दी।

अब सेठ को वह महत्वपूर्ण काम करना था जिसका उन्होंने मिहतो जी से वायदा किया। वह बड़ी निष्ठा से आदिवासियों के बीच जाकर उन्हें सुधारने के लिये किस प्रकार और क्या करना चाहिये इस पर विचार करने लगे और उसकी तैयारी में जुट गये।

सी बी टी की कुछ पुस्तकें

भेड़िया बच्चे
ए.के. श्रीकुमार

अपूर्व साहस
नीलिमा सिन्हा

अन्तरिक्ष का यात्री
पोयली सेनगुप्ता

पारस पत्थर
उषा यादव

अपराजिता
कमला शर्मा

जंगल में वे दो दिन
कावेरी भट्ट

गोपाल भांड
आचार्य परमहंस प्रमोद

कम्प्यूटर के जाल में
इरा सक्सैना

काजीरंगा में आखिरी दांव
अरूप कुमार दत्त